04 - जल, जमीन, जंगल से जुड़े कलाकार पवनेन्द्र कुमार

05 - डॉ. राम मनोहर लोहियाः गरीबों का अपना आदमी

06 - मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार, अपराधियों को पनाह...

07 - जब फिल्मों में नहीं थे रंग, तब भी मनी रंगीन होली

सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

रविवार, 23 मार्च, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 162, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

संतान की सेहत और उम्र की कामना .....

शीतलाष्टमी पर गुरुग्राम के शीतला माता मंदिर में दिनभर पूजा-अर्चना चलती रही।

दंगाइयों के घर चलेगा बुलडोजर

जब्त होगी प्रॉपर्टी

यूपी सीएम योगी की राह पर देवेंद्र फडणवीस, किया बड़ा ऐलान

● दंगाइयों से ही होगी नुकसान की भरपाई

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के नागपुर में हिंसा के बाद मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शनिवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर बड़ा ऐलान किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि दंगे में हुए नुकसान की भरपाई दंगाइयों से कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि दंगाई अगर भुगतान नहीं करते, तो उनकी संपत्ति जब्त कर बेची जाएगी। सीएम फडणवीस ने बताया कि दंगे में शामिल 104

लोगों को पकड़ा गया है, जिनमें से 92 गिरफ्तार किए गए हैं, जबकि शेष नाबालिग हैं। दंगाइयों की पहचान सीसीटीवी फुटेज और वीडियो रिकॉर्डिंग के जरिए की जा रही है और अंतिम आरोपी की गिरफ्तारी तक कार्रवाई जारी रहेगी।

अजित पवार बोले-

मुस्लिमों को आंख दिखाने वाले को बख्शेंगे नहीं- नागपुर में 17 मार्च को हुई हिंसा के बाद महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार ने कहा- जो भी मुस्लिम भाइयों को आंख दिखाएगा, दो समूहों के बीच संघर्ष भड़काकर कानून व्यवस्था को बाधित करेगा और कानून को अपने हाथ में लेने की कोशिश करेगा। वह चाहे कोई भी हो, उसे किसी भी हालत में बख्शा या माफ नहीं किया जाएगा। पवार ने ये बयान पार्टी की ओर से मुंबई के इस्लाम जिमखाना में शुक्रवार को दी गई इफ्तार पार्टी के दौरान दिया।

छत्तीसगढ़ के साहित्यकार विनोद शुक्ल को मिलेगा ज्ञानपीठ सम्मान

● प्रदेश से किसी साहित्यकार को पहली बार मिलेगा यह सम्मान

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के रायपुर के रहने वाले हिंदी के शीर्ष कवि-कथाकार विनोद कुमार शुक्ल को इस साल का ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया जाएगा। इसकी घोषणा आज (शनिवार) नई दिल्ली में ज्ञानपीठ चयन समिति ने की है। छत्तीसगढ़ से किसी साहित्यकार को पहली बार ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलेगा। विनोद कुमार शुक्ल को 59वां ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलेगा। यह हिन्दी के 12वें साहित्यकार हैं, जिन्हें इस पुरस्कार से नवाजा जा रहा है। सुप्रसिद्ध

कथाकार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रतिभा राय की अध्यक्षता में चयन किया गया है। सुप्रसिद्ध कथाकार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रतिभा राय की अध्यक्षता में प्रवर परिषद की बैठक में निर्णय लिया गया। चयन समिति में माधव कौशिक, दामोदर मावजो, प्रभा वर्मा, डॉ. अनामिका, डॉ. ए. कृष्णा राव, प्रफुल्ल शिलेदार, डॉ. जानकी प्रसाद शर्मा और ज्ञानपीठ के निदेशक मधुसूदन आनन्द शामिल थे।

सुप्रभात

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैंने हाथ बढ़ाया
मेरा हाथ पकड़कर वह खड़ा हुआ
मुझे वह नहीं जानता था
मेरे हाथ बढ़ाने को जानता था
हम दोनों साथ चले
दोनों एक दूसरे को नहीं जानते थे
साथ चलने को जानते थे।

– विनोद कुमार शुक्ल

जेजेपी नेता का मर्डर, गोली माथे के हो गई आर-पार

● चचेरे भाई समेत 2 घायल

पानीपत (एजेंसी)। हरियाणा के पानीपत में शुक्रवार रात सवा 8 बजे जननायक जनता पार्टी के नेता की गोलियां मारकर हत्या कर दी गई। हमलावर ने जेजेपी नेता रविंद्र मित्रा के साथ उनके चचेरे भाई विनीत और एक अन्य व्यक्ति विनय पर भी फायरिंग की। ये दोनों घायल हैं। मित्रा को 2 गोलियां माथे और पेट में लगी थी। माथे में गोली आर-पार हो गई थी। दरअसल, विकास नगर के रहने वाले रविंद्र उर्फमित्रा की साली की शादी उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में आरोपी रणबीर पहलवान के साले के साथ हुई थी। 2016 के बाद से उनके बीच विवाद चल रहा है।

सम्राट विक्रमादित्य के जीवन और शासन व्यवस्था से जन-जन को अवगत कराना है विक्रमोत्सव का उद्देश्य : सीएम

राष्ट्रपति श्रीमती मुर्मू, प्रधानमंत्री और केन्द्रीय गृह मंत्री शाह को सीएम ने किया आमंत्रित

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 'भारतीय ज्ञान परम्परा से विरासत से विकास' के ध्येय को देश में साकार कर रहे हैं। भगवान श्रीराम के बाद सम्राट विक्रमादित्य का शासन ही सुशासन की मिसाल स्थापित करता है। प्रदेश सहित देश के विभिन्न भागों में विक्रमोत्सव अंतर्गत हो रहे कार्यक्रम सम्राट विक्रमादित्य के जीवन के विभिन्न पहलुओं और उनकी शासन व्यवस्था से जन-जन को प्रेरित कराने का एक अभूतपूर्व प्रयास है। आगामी 12-13 और 14 अप्रैल 2025 को नई दिल्ली में सम्राट विक्रमादित्य पर केन्द्रित भव्य आयोजन होने जा रहा है। इसमें राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री श्री मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह को आमंत्रित किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विक्रमोत्सव के संबंध में नई दिल्ली में मीडिया के लिए जारी संदेश में ये विचार व्यक्त किए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि न्यायप्रियता, ज्ञानशीलता, धैर्य, पराक्रम, पुरूषार्थ, वीरता और गंभीरता जैसी विशेषताओं के लिए सम्राट विक्रमादित्य का संपूर्ण भारत के साथ ही विश्व में आदर के साथ स्मरण किया जाता है। सम्राट विक्रमादित्य द्वारा विदेशी आक्रांताओं को पराजित कर 2082 वर्ष पहले विक्रम संवत का प्रवर्तन किया गया था। उन्होंने सुशासन के सभी सूत्रों को स्थापित करते हुए अपने सुयोग्य 32 मंत्रियों का चयन किया, इसीलिए उनके सिंहासन को सिंहासन बत्तीसी'' कहा जाता है। सम्राट विक्रमादित्य ने गणराज्य की स्थापना कर लोकतांत्रिक व्यवस्था का क्रियान्वयन आरंभ किया। साथ ही जनता के लिए जवाबदेह नवरत्नों का मंत्री-मंडल गठित कर ऐसी व्यवस्था की जिसमें राजा नहीं बल्कि नौ मंत्रियों द्वारा लिए गए निर्णयों का शासन द्वारा क्रियान्वयन किया जाता था। सुशासन के लिए वर्तमान में क्रियान्वित मापदंड सम्राट विक्रमादित्य के काल की याद दिलाते हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य ने शून्य प्रतिशत ब्याज पर राशि देकर व्यापार-व्यवसाय को प्रोत्साहित किया और हर व्यक्ति के लिए आशियाने की बात कही। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने भी शहरी हो या गरीब सभी के लिए पक्के मकान की व्यवस्था के लिए प्रभावी कदम उठाए हैं। उनके द्वारा बिना ब्याज के धन राशि उपलब्ध कराने की व्यवस्था भी की गई है। शिक्षा, न्यायप्रियता प्रत्येक क्षेत्र में भारत को आगे बढ़ाने के लिए सम्राट विक्रमादित्य का काल और आज के इस काल में अनेकों समानताएं हैं।

मार्च के अंत तक शुरू हो जाएगी इंजन की डिलीवरी

आ गई खुशखबरी, बहुत जल्द हुंकार भरेगा तेजस

● आखिरकार भारतीय वायुसेना को मिलने लगेंगे विमान

वॉशिंगटन (एजेंसी)। तेजस फाइटर जेट को लेकर आखिरकार भारत को खुशखबरी मिल गई है। मार्च के अंत से फाइटर जेट विमानों की इंजन की डिलीवरी शुरू हो जाएगी। विमानों के लिए इंजन बनाने वाली अमेरिका की प्रमुख जीई ने आखिरकार मार्च के अंत में इंजन भेजने की बात कह दी। कॉन्ट्रैक्ट के मुताबिक तेजस एमके 1ए फाइटर जेट की इंजन की डिलीवरी में 2 सालों से ज्यादा वक्त का लेट हुआ है, जिसको लेकर भारत की तरफ से कड़ी प्रतिक्रियाएं भी दी गई थी। लेकिन अब इस महीने से हाल को 99 जीई-404 इंजनों में से पहला इंजन मिलने जा रहा है। आपको बता दें कि जीई-404 इंजन तेजस मार्क 1-ए लड़ाकू विमानों में इस्तेमाल किए जाने हैं, जिनकी आपूर्ति में देरी ने इंडियन एयरफोर्स को काफी परेशान कर दिया था। रिपोर्ट के मुताबिक मामले की जानकारी रखने वाले कम से कम दो अधिकारियों ने कहा है कि कॉन्ट्रैक्ट के मुताबिक इंजनों में से पहले इंजन की डिलीवरी इस महीने के अंत तक होने की उम्मीद है। 2025 में कुल 12 इंजन मिलने की उम्मीद है जिनमें से प्रत्येक इंजन की डिलीवरी जीई हर साल करेगी। हाल ने साल 2021 में जीई के साथ 99 इंजनों के लिए 716

मिलियन अमेरिकी डॉलर का सौदा किया था। इंजनों की डिलीवरी 2023 से शुरू हो जानी थी लेकिन अभी तक इंजनों की डिलीवरी नहीं हो पाई है। इसके अलावा हाल अमेरिका और भारत के बीच किए गये आईसीईटी के तहत टेक्नोलॉजी ट्रांसफर के जरिए भारत में शक्तिशाली इंजनों के निर्माण के लिए जीई के साथ काम कर रहा है। जीई-414 इंजन डीआरडीओ द्वारा विकसित किए जा रहे एडवांस मल्टी-रोल कॉम्बैट एयरक्राफ्ट को शक्ति प्रदान करेगा। आपको बता दें भारत सरकार ने जीई को इंडियन एयरफोर्स के लिए 83 फाइटर जेट बनाने का ऑर्डर दे रखा है। लेकिन इंजन नहीं मिलने से जीई का ये प्रोजेक्ट अटका पड़ा है। जिसको लेकर पिछले दिनों भारतीय वायुसेना के एयर मार्शल एपी सिंह ने अपनी निराशा भी जताई थी। जिसके बाद भारत के रक्षा सचिव आरके सिंह की अध्यक्षता में रक्षा मंत्रालय ने प्रस्तावित पांचवीं पीढ़ी के लड़ाकू विमानों के लिए एक व्यावसायिक मॉडल तैयार करने के लिए एक समिति गठित की है। रिपोर्ट के मुताबिक यह समिति प्रस्तावित जीई के किसी भी तकनीकी पहलू पर विचार नहीं करेगी, बल्कि एक ऐसा मॉडल तैयार करेगी जिसमें पांचवीं पीढ़ी के प्रोजेक्ट में निजी क्षेत्र की भागीदारी शामिल हो। रिपोर्ट के मुताबिक पूरा विचार यह है कि देश की जरूरतों को पूरा करने के लिए हाल के अलावा भी अन्य विकल्प होने चाहिए।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 23 मार्च 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

सौरभ के सीने पर बैठकर मुस्कान ने छेद डाली छाती

● गर्दन भी खुद ने काटी, दिल दहला देगी पोस्टमार्टम रिपोर्ट

मेरठ (एजेंसी)। मेरठ में सौरभ मर्डर केस ने पूरे देश को दहला दिया है। इस मामले में नई-नई बातें सामने आ रही हैं। केस की परतें जैसे-जैसे खुल रही हैं, मुस्कान का सच भी सामने आ रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मर्चेंट नेवी ऑफीसर सौरभ राजपूत की दर्दनाक हत्या की तहें खुल गई हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि सौरभ को पहले बेहोश कर दिया गया। इसके बाद मुस्कान उसके

सीने पर चढ़कर बैठ गई। मुस्कान के प्रमी साहिल ने उसे बताया कि कैसे चाकू से उसकी छाती छेदनी है। मुस्कान जब चाकू नहीं मार पाई तो उसने हाथ पकड़कर समझाया और फिर मुस्कान ने तीन बार कसकर दिल पर वार किया। ऑटोप्सी में पता चला है कि सौरभ की छाती पर तीन बार चाकू से जोरदार वार किया गया था। पुलिस के सूत्रों ने बताया कि सौरभ की गर्दन को काट दिया गया था और उसके सिर को अलग कर दिया गया था। इसके अलावा पैरों को काटकर अलग कर दिया गया और धड़ को क्षत-विक्षत कर डाला।

पूर्व कानून मंत्री प्रसाद ने जजों से कहा

बेटियों को लेकर संवेदनशील रहें

इंदौर (नप्र)। इंदौर में पूर्व केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने केंद्र सरकार के बजट पर लोगों से चर्चा की। कहा- भारत की अर्थव्यवस्था आगे बढ़ रही है और अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के अनुसार देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।उन्होंने नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के एक बयान पर प्रतिक्रिया भी दी और सवाल किया कि राहुल गांधी खुद किस मेरिट के आधार पर नेता बने हैं? राहुल गांधी होमवर्क नहीं करते और उनका ट्वीटर बदलना चाहिए।

रविशंकर प्रसाद ने कर्नाटक सरकार के 4 प्रतिशत आरक्षण के फैसले की आलोचना की। कहा कि इसमें ओबीसी वर्ग के अधिकार को नुकसान पहुंचाया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उपासना पद्धति के आधार पर आरक्षण देना सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के खिलाफ है। इसके अलावा उन्होंने इंदौर की आर्थिक प्रगति की सराहना करते हुए कहा- इंदौर देश के शीर्ष शहरों में शामिल है और यहां की अर्थव्यवस्था लगातार मजबूत हो रही है।

बेटियों के प्रति संवेदनशील बनें न्यायमूर्ति- जस्टिस मिश्रा ने यह कहा था: यह इलाहाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस राम मनोहर नारायण मिश्रा ने अपने एक फैसले में कहा था कि आरोपियों ने महिला का प्राइवेट पार्ट पकड़ा और उसके कपड़े उतारने की कोशिश की, लेकिन यह बलात्कार की कोशिश नहीं मानी जा सकती। बलात्कार की कोशिश साबित करने के लिए स्पष्ट इरादा दिखना चाहिए। तथ्यों के आधार पर यह सिर्फ वस्त्र उतारने के इरादे से हमले (आईपीसी की धारा 354) का मामला बनता है, बलात्कार का नहीं।

छत्रपति शिवाजी का म्यूजियम बनाएगी महाराष्ट्र की सरकार

● आगरा के कोठी मीना बाजार में औरंगजेब ने मराठा योद्धा को नजरबंद किया था

मुंबई/आगरा (एजेंसी)। महाराष्ट्र सरकार ने शुक्रवार को एक गवर्नमेंट रेजोल्यूशन जारी किया। अब महाराष्ट्र सरकार उत्तर प्रदेश के आगरा की उस जगह (कोठी मीना बाजार) को खरीदेगी, जहां छत्रपति शिवाजी महाराज मुगलों को औरंगजेब ने नजरबंद किया था। यहां म्यूजियम बनाने की तैयारी है।

दरअसल, 19 फरवरी को महाराष्ट्र में एक सभा को संबोधित करते हुए सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा था- आगरा में जहां छत्रपति शिवाजी महाराज को कैद रखा था, वहां पर स्मारक बनाएंगे। महाराष्ट्र सरकार इस जमीन का अधिग्रहण करेगी। मैं खुद योगी आदित्यनाथ से बात करुंगा। इसके बाद 12 मार्च को यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा था कि प्रमुख सचिव (पर्यटन) मुकेश मेश्राम आगरा की मीना कोठी बाजार के डॉक्यूमेंट जल्द तैयार कर लें। वर्तमान स्टेटस रिपोर्ट मुझे भेज दें।

विक्रमोत्सव- विक्रम नाट्य समारोह का शुभारंभ-कलाकारों ने सुनायी अहिल्या के देवी बनने की कहानी

विक्रमोत्सव

डॉ. जफर महमूद
उज्जैन से

उज्जैन। महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा विक्रमोत्सव के अंतर्गत विक्रम नाट्य समारोह का शुभारंभ हुआ। कालिदास अकादमी में अनिल दुबे द्वारा निर्देशित नाटक 'देवी अहिल्याबाई' का प्रभावी मंचन हुआ। नाट्य प्रस्तुति का कथानक अहिल्याबाई के देवी बनने की कहानी पर आधारित था।

प्रस्तुति में अहिल्याबाई के बचपन की कहानी को दिखाया गया। जिसमें उनके प्रतिभाशाली,समझदार, संस्कारी और शिव भक्त होने का उल्लेख था, जिससे प्रभावित होकर मल्हारराव ने उन्हें अपने पुत्र खंडेराव के लिए पुत्रवधू के रूप में चुना। खंडेराव द्वारा परेशान किये जाने के बावजूद अहिल्या कभी अपने भक्ति मार्ग एवं परिवार के कर्तव्यों से विमुख नहीं हुई। मल्हारराव से राज्य शासन का कार्य और युद्ध कौशल सीखा। पति की मृत्यु के बाद जब सती होने से उन्हें पितातुल्य ससुर ने रोक लिया तो सारा ऐश्वर्य त्याग कर तपस्वीनी के रुप में जीवन बिताया। ससुर और बेटे की मृत्यु के बाद जब शासनभार संभाला तब उनके सामने बड़ी चुनौती थी राज्य में फैली अराजकता को खत्म करना। राज्य से बेरोजगारी दूर करना, तब उन्होंने भारत वर्ष में ना केवल मंदिरों का बल्कि मस्जिदों और मजारों का भी जीर्णोद्धार करवाया, प्याऊ खुलवाये, धर्मशालाओं का निर्माण करवाया, कुएं खुदवाये, मार्ग बनवाये, जिससे लोगों को रोजगार मिला, बुनकरों को प्रशिक्षण दिलवाया, जिससे व्यापार बढ़ा। अहिल्याबाई का मानना था कि धार्मिक स्थल एकता के सूत्र होते हैं। इन सब कार्यों के दौरान उन्हें आंतरिक विद्रोह का सामना भी करना पड़ा। जिसे उन्होंने अपनी कुशल राजनितिज्ञ समझ से हल किया, बाहरी दुश्मनों का दमन अपने युद्ध कौशल से किया। जब उनके दामाद की मृत्यु हुई तो बेटी मुक्ताबाई को सती होने से रोकने के उन्होंने बहुत प्रयास किए लेकिन रोक ना सकी, इस बात का उन्हें सदैव दुख रहा। कलाकारों ने नाटक के माध्यम से अहिल्याबाई से देवी बनने की कहानी को प्रस्तुत किया गया है।

वेद ग्रंथ के पूजन के साथ प्रारंभ हुई वेद मंत्र अंताक्षरी

उज्जैन की श्री गुमानदेव हनुमान गढ़ी पर वैदिक मित्रों की अनूठी अंताक्षरी का आयोजन हुआ। मौन तीर्थ पीठाधीश्वर महामंडलेश्वर श्री सुमनानंद जी महाराज के सानिध्य में आयोजित अंताक्षरी का संयोजन अनुष्ठान मंडपम ज्योतिष अकादमी के प्रमुख पं. चंदन श्यामनारायण व्यास द्वारा किया गया। अध्यक्षता पाणिनी संस्कृत वैदिक विश्व विद्यालय के कुलगुरु प्रो. श्री विजय कुमार सी.जी. ने की। कार्यक्रम में महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी,कालिदास अकादमी के पूर्व निदेशक डॉ. संतोष पंड्या,अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. सुरेन्द्र चतुर्वेदी प्रसिद्ध गीता प्रचारक स्वामी गीतानंद जी महाराज उपस्थित थे। निर्णायक पं. राहुल शर्मा एवं पं. विपुल शर्मा थे। विभिन्न गुरुकुलों के छात्रों द्वारा शुक्ल यजुर्वेद संहिता के मंत्रों पर आधारित वेद मंत्रों की अंताक्षरी की प्रतियोगिता हुई। कन्व वेद विद्यालय के बटुकों ने प्रथम, त्रिपुर सुंदरी वेद विद्यालय के बटुकों ने द्वितीय तथा मौनी बाबा वेद गुरुकुल के बटुकों ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। पं. अधीश द्विवेदी समन्वयक थे। कार्यक्रम में पं गोपाल कृष्ण दवे, पं राम शुक्ल, युवा कथाकार पं कमलेश भाई , पं हेमंत जोशी आदि उपस्थित रहे। संचालन डॉ पतंजलि कुमार पांडे ने किया। आभार पंडित अधीश द्विवेदी ने वक्त किया।

नेपाल के राजनयिक द्वारा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल का शुभारंभ

नेपाल दूतावास के राजनयिक रवींद्र जंग थापा ने पौराणिक फिल्मों के अंतरराष्ट्रीय महोत्सव (आईएफएफएएस) का शुभारंभ किया। फिजी गणराज्य के उच्चायुक्त एच.ई. जगन्नाथ सामल , नेपाल दूतावास दीपक राज निरौला राजनयिक दक्षिण अफ्रीकी उच्चायोग की रामसेला एवलिन लेसोथो उच्च आयोग बोहलोकिमोरोजेल व मोत्सेलिसी बर्नाडेटो फात्सिमो मोखोथो अतिथि के रूप में उपस्थित थे। अतिथियों ने अपने उद्बोधन में कहा कि यह फिल्म समारोह राष्ट्रों के मध्य सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने जैसा महत्वपूर्ण कार्य करेगा।

अतिथियों ने महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ तथा मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का आभार व्यक्त किया। राजनायिकों का स्वागत महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी, विक्रम विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. अर्पण भारद्वाज तथा विक्रम विश्वविद्यालय कार्य परिषद के अध्यक्ष राजेश सिंह कुशवाह ने किया। इसके उपरांत सभी सम्माननीय अतिथियों महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ परिसर में प्रदर्शित भारतीय ऋषि वैज्ञानिक परंपरा पर केन्द्रित प्रदर्शनी आर्ष भारत का अवलोकन भी किया।

महोत्सव में भारतीय फिल्मों श्री कृष्ण विवाह, महाभारत,श्री कृष्ण अवतार (तेलुगू) कृष्ण लीला (बंगाली) बलराम कृष्ण (गुजराती) कृष्ण कावेरी (उड़िया)श्री कृष्णा परुंथू (मलयालम) के साथ विदेशी फिल्में दिया लीफ ऑफ़ द एंजेल,एबरेंस को प्रदर्शित किया गया।

मणिपुर पहुंची 'सुप्रीम' जजों की टीम, जानेगी हालात

● राहत शिविरों का करेंगे दौरा, लोगों से जानेंगे वर्तमान स्थिति ● जातीय हिंसा के बाद विस्थापित हुए लोगों से भी करेंगे चर्चा

इंफाल (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के पांच जजों का प्रतिनिधिमंडल शनिवार सुबह इंफाल पहुंचा। जस्टिस बी.आर. गवई के नेतृत्व में जज प्रतिनिधिमंडल मणिपुर में हुए जातीय हिंसा के बाद विस्थापित हुए लोगों से मिलेंगे, और राहत शिविरों का दौरा करेंगे। इसके साथ ही चुराचांदपुर जिले में मिनी सचिवालय से कानूनी सेवा शिविरों, कानूनी सहायता क्लीनिकों और अस्थायी चिकित्सा सुविधाओं का वर्चुअल उद्घाटन करेंगे। इसके बाद वे बिष्णुपुर में मोइरांग कॉलेज में एक राहत शिविर जाएंगे। सुप्रीम कोर्ट का जज प्रतिनिधिमंडल रविवार को मणिपुर उच्च न्यायालय में एक कार्यक्रम में भी भाग लेंगे। वहीं मणिपुर पुलिस ने उग्रवादी समूहों के सात कैडरों को गिरफ्तार किया। साथ ही राज्य भर में कई छापों के दौरान हथियार और गोला-बारूद बरामद किया। मणिपुर पुलिस ने एक्स पर पोस्ट कर कहा, 21 मार्च को मणिपुर पुलिस और एआर की एक संयुक्त टीम ने संगठन के एक सक्रिय कैडर थंगमंगजम नाओबा सिंह (28 वर्ष) उर्फ पामुबा को मयांग लांगजिंग बाजार, इंफाल पश्चिम से गिरफ्तार किया। उसी दिन एक अलग ऑपरेशन में, मणिपुर पुलिस ने संगठन के चार सक्रिय कैडरों को गिरफ्तार किया था। 21 मार्च को, मणिपुर पुलिस ने तीन सक्रिय कार्यकर्ताओं मुतुम जैक्सन मीतेई (20), अकोईजाम संजोय सिंह (19) और नोंगथोमबम गोपेन सिंह (59) को इंफाल पश्चिम जिले में उनके घरों से गिरफ्तार किया। उनके पास से एक इंसास राइफल और तीन राउंड से भरी एक मैगजीन, दो राउंड से भरी मैगजीन के साथ एक 9 एमएम पिस्तौल, दो एयर

गन, एक डबल बैरल गन, लेथोड गन का एक बॉडी पार्ट, इंसास एलएमजी की एक खराब मैगजीन, एसएलआर राइफल की एक मैगजीन, 7.62 एलएमजी की एक खराब मैगजीन, एक लेथोड खोल और एक आंसू धुएं का खोल जब्त किया गया। मणिपुर के चुराचांदपुर में शुक्रवार को 9 साल की एक लड़की का शव मिला। पुलिस ने बताया, नाबालिग लड़की गुरुवार शाम करीब 6 बजे लापता हो गई थी। एक दिन बाद उसका शव लानवा टीडी ब्लॉक में विस्थापितों के लिए बने रिलीफ कैंप के पास मिला। पुलिस के मुताबिक पीड़ित के शरीर पर कई जगह चोट के निशान हैं। पुलिस ने रेप का संदेह जताया है।

जस्टिस एन कोटिश्वर का विरोध करने लगे कुकी समर्थक वकील

अधिकारियों ने बताया कि प्रतिनिधिमंडल में शामिल न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह मेइती समुदाय से हैं और वह कुकी बहुल चुराचांदपुर जिले का दौरा नहीं करेंगे क्योंकि वहां वकीलों के एक संगठन ने इस पर आपत्ति जताई है। उन्होंने कहा कि न्यायमूर्ति सिंह बिष्णुपुर जिले का दौरा करेंगे। 'ऑल मणिपुर बार एसोसिएशन' (एएमबीए) ने चुराचांदपुर जिले की बार एसोसिएशन से आग्रह किया है कि वह मेइती समुदाय से ताल्लुक रखने वाले उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश को कुकी-जो बहुल क्षेत्र का दौरा करने से रोकने वाले अपने निर्देश को वापस ले। एएमबीए के अध्यक्ष पुयम तोमचा मीतेई ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के जजों का यह दौरा ऐतिहासिक और अपनी तरह का पहला दौरा है। सुप्रीम कोर्ट के जज रविवार को मणिपुर उच्च न्यायालय में एक कार्यक्रम में भी भाग लेंगे। मणिपुर में मई 2023 से अब तक मेइती और कुकी-जो समूहों के बीच जातीय हिंसा में 250 से अधिक लोग मारे गए हैं और हजारों लोग बेघर हुए हैं।

कुरुक्षेत्र में महायज्ञ के दौरान हिंसक झड़प

● ब्राह्मणों पर की गई फायरिंग, तीन पंडित घायल

कुरुक्षेत्र (एजेंसी)। हरियाणा के कुरुक्षेत्र में आयोजित 1008 कुंडीय महायज्ञ के दौरान गोलीबारी की घटना सामने आई है। इस गोलीबारी में पंडित आशीष कुमार घायल हो गए, जबकि कई ब्राह्मणों को गंभीर रूप से सिर में चोटें आईं। घटना के बाद

गुस्साए ब्राह्मणों ने कुरुक्षेत्र-कैथल रोड को जाम कर दिया, जिससे इलाके में तनाव का माहौल बन गया। ब्राह्मणों ने आरोप लगाया कि यह हमला जानबूझकर किया गया और वे न्याय की मांग कर रहे हैं। हरियाणा के कुरुक्षेत्र में 18 मार्च से महायज्ञ की शुरुआत हुई थी। खराब खाने की शिकायत को लेकर 1008 कुंड वाले इस शिव शक्ति महायज्ञ में शामिल ब्राह्मणों पर लाठियां बरसाई गईं। शनिवार की सुबह तीन ब्राह्मण गोली लगने के कारण घायल हो गए।

भोपाल में छठी बटालियन के जवान ने फांसी लगाई

भोपाल (नप्र)। भोपाल की नेहरू नगर पुलिस लाइन में रहने वाले छठी बटालियन के जवान भूर सिंह जामोद ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। वह कर्ज से परेशान थे। पुलिस को उनके घर से लोन संबंधी दस्तावेज मिले हैं। हालांकि उनके पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है।उनकी पत्नी प्रेग्नेंट है। डिलीवरी के लिए जवान ने कुछ दिन पहले पत्नी को मायके भेज दिया था। मामले में कमला नगर पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। घटना शुक्रवार रात की है। पीएम के बाद शनिवार दोपहर शव परिजनों को सौंप दिया गया है।भूर सिंह जामोद (35) पुत्र जाम सिंह जामोद मूल रूप से देही जिला धार के रहने वाले थे। छठी बटालियन भोपाल में पदस्थ थे और नेहरू नगर पुलिस लाइन में रहते थे।

● जज के बंगले से कैश मिलने का मामला

97 करोड़ के घोटाले में भी आया था जस्टिस यशवंत वर्मा का नाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाईकोर्ट के जस्टिस यशवंत वर्मा के घर से 15 करोड़ कैश मिलने के मामले में कार्रवाई शुरू हो गई है। दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस डीके उपाध्याय ने शुक्रवार को इंटरनल इन्क्वायरी रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट के सीजेआई संजीव खन्ना को सौंप दी। अब कॉलेजियम इस पर आगे की कार्रवाई करेगा। इससे पहले 2018 में गाजियाबाद की सिम्भावली शुगर मिल में गड़बड़ी के मामले में जस्टिस वर्मा के खिलाफ सीबीआई ने एफआईआर दर्ज की थी। रिपोर्ट के मुताबिक ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स ने मिल में गड़बड़ी की शिकायत की थी। शिकायत में कहा था कि शुगर मिल ने किसानों के लिए जारी किए गए 97.85 करोड़ रुपए के लोन का गलत इस्तेमाल किया है। जस्टिस वर्मा तब कंपनी के नॉन-एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर थे। इस मामले में सीबीआई ने जांच शुरू की थी। हालांकि, जांच धीमी होती चले गई। फरवरी 2024 में एक अदालत ने सीबीआई को बंद पड़ी जांच दोबारा शुरू करने का आदेश दिया, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इस आदेश को पलट दिया और सीबीआई ने जांच बंद कर दी। इस बीच, दिल्ली फायर सर्विस के प्रमुख अतुल गर्ग ने कहा है कि मैंने ऐसा कोई बयान नहीं दिया है कि जज के घर कैश नहीं मिला है। 21 मार्च को मीडिया रिपोर्ट्स में गर्ग का बयान छपा था।

परिसीमन के खिलाफ बैठक को स्टालिन ने कहा ऐतिहासिक

● हैदराबाद में अगली बैठक तय, पांच राज्यों के बड़े नेता पहुंचे ● डीएमके की बैठक में परिसीमन पर विपक्ष ने दिखाई एकजुटता

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु में परसिमन को लेकर बड़ी बैठक हुई। इस बैठक में विपक्ष ने ताकत दिखाई। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) के अध्यक्ष एमके स्टालिन की अध्यक्षता में यह बैठक हुई। परिसीमन पर संयुक्त कार्रवाई समिति (जेएसी) की यह पहली बैठक थी। अब अगली बैठक के लिए हैदराबाद को चुना गया है। स्टालिन ने कहा कि मैं केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, पश्चिम बंगाल और पंजाब के नेताओं का हार्दिक स्वागत करता हूं, जो निष्पक्ष परिसीमन पर संयुक्त कार्रवाई समिति की बैठक में हमारे साथ शामिल हुए। स्टालिन ने कहा कि हम परिसीमन के खिलाफ नहीं हैं। हम निष्पक्ष परिसीमन के पक्ष में हैं। उन्होंने कहा कि अधिकार स्थापित करने के लिए निरंतर कार्रवाई बहुत जरूरी है। तमिलनाडु सरकार ने परिसीमन को लेकर राज्यों की चेन्नई में अपनी पहली बैठक की मेजबानी की। इस मौके पर मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कहा कि यह दिन इतिहास में दर्ज होगा। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने कहा कि उचित परिसीमन के लिए अपनी प्रतिबद्धता में वे एकजुट हैं। उन्होंने कहा,आज का दिन इतिहास में उस दिन के रूप में अंकित होगा जब हमारे देश के विकास में योगदान देने वाले राज्य सुनिश्चित करके इसके संघीय ढांचे की रक्षा के लिए एक साथ आए। मैं इस

बैठक में सभी मुख्यमंत्रियों और राजनीतिक नेताओं का गर्मजोशी से स्वागत करता हूं, जो परिसीमन के लिए हमारी प्रतिबद्धता में एकजुट हैं। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने शनिवार को कहा कि निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन पर अगली बैठक हैदराबाद में होगी। इससे पहले, तमिलनाडु के सीएम ने संयुक्त कार्रवाई समिति की बैठक का नेतृत्व करते हुए सभी विपक्षी दलों से एकजुट होने का आह्वान किया।

पिनराई विजयन भी केंद्र पर भड़के

स्टालिन ने दोहराया कि विपक्ष परिसीमन की अवधारणा के खिलाफ नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रक्रिया निष्पक्ष रहे और राजनीतिक प्रतिनिधित्व को कमजोर न करे। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने शनिवार को अपने भाषण में परिसीमन के मुद्दे पर बीजेपी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार पर तीखा हमला किया। उन्होंने कहा कि बिना किसी परामर्श के यह अचानक प्रक्रिया किसी संवैधानिक सिद्धांत से नहीं, बल्कि संकीर्ण राजनीतिक हितों से प्रेरित है। सीएम विजयन ने बैठक के दौरान कहा, लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों का प्रस्तावित परिसीमन हमारे सिर पर मंडरा रहा है... विभिन्न रिपोर्टों से संकेत मिलता है कि बीजेपी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार बिना किसी परामर्श के परिसीमन प्रक्रिया के साथ आगे बढ़ रही है।

परिक्रमा

चंबल जैसा टिकाऊ जज्बा और कहीं नहीं दिखता....

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

मध्यप्रदेश विधानसभा में अक्सर विधायकों के निशाने पर पुलिस का व्यवहार रहता है। यहां तक कि 21 मार्च शुक्रवार को पुलिस प्रताड़ना संबंधी प्रश्न का उत्तर देते हुए सदन में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल भावुक हो गये। वे गृह विभाग से जुड़े पुलिस प्रताड़ना संबंधी प्रश्न का उत्तर दे रहे थे। विधानसभा में उस समय एक प्रकार से सन्नाटा पसर गया जब राज्यमंत्री पटेल भावुक हो गये और उत्तर नहीं दे पाये, लेकिन कुछ देर बाद उन्होंने अपने को संभालते हुए उत्तर दिया। यह मामला रीवा जिले के सेमरिया से कांग्रेस विधायक अभय मिश्रा और उनके पुत्र विभूति नारायण मिश्रा के ऊपर फर्जी प्रकरण बनाये जाने को लेकर था। प्रश्न पूछते-पूछते पहले तो मिश्रा भावुक हुए और उन्होंने यहां तक कह दिया कि मेरा बेटा आत्महत्या कर लेगा, हमारी क्या औकात है। कांग्रेस के अधिकांश विधायकों ने मिश्रा का समर्थन करते हुए पुलिस की कार्यप्रणाली पर ही सवालिया निशान लगाये। सदन की भावना को ध्यान में रखते हुए अंततः राज्यमंत्री पटेल ने थाना प्रभारी अवनीश पांडे को निलंबित करने और मामले की उच्च स्तरीय जांच कराने की घोषणा की और कहा कि झूठी रिपोर्ट लिखाने वाले के विरुद्ध भी कार्रवाई होगी।

नगरीय विकास एवं आवास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने बताया है कि भोपाल और इंदौर का मास्टर प्लान तैयार है और केंद्र के सुझावों पर उसमें बदलाव किया जा रहा है। हर शहर की प्लानिंग 25 साल के लिए हो इस पर हम अभी से काम कर रहे हैं। शहरों के विकास की गति तेज करने के लिए जनभागीदारी को बढ़ावा देने में सहयोग करें। इंदौर-भोपाल के मास्टर प्लान को मार्च अन्त तक अंतिम रुप दे दिया जायेगा। यूनियन कार्बाइड के कचरे को जलाने की रिपोर्ट जनता के बीच लाई जायेगी। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिघार ने अपनी बात रखते हुए कहा कि विधायक नारायण पट्टा के साथ भी घटना हुई है, पुलिस गलत करे और हम मनोबल बढ़ाने की बात करें यह कहीं से भी उचित नहीं। विधायकों से जुड़ा हुआ मामला है इसलिए थाना प्रभारी को निलंबित किया जाए।

विधानसभा में प्रश्नकाल के दौरान अभय मिश्रा ने थाना चौरहटा में अपने और पुत्र के विरुद्ध आपराधिक प्रकरण दर्ज करने का मामला उठाते हुए कहा कि मोटर साइकिल और स्कार्पियो की दुर्घटना में उन्हें आरोपित बना दिया गया। उस समय थाना प्रभारी अवनीश पांडे थे। बाद में हुई उच्च स्तरीय जांच में प्रकरण समाप्त कर दिया गया। प्रकरण दर्ज करने वाले ने ही खात्मा किया। एफआईआर में उनका नाम है, जनप्रतिनिधि के सम्मान की बात की जाती है लेकिन पुलिस ऐसा व्यवहार करती है, फर्जी मामलों में फंसा कर ऐसा किया जाता है, मेरा बेटा इतना डरा हुआ है कि दो वर्ष से त्यौहार मनाने नहीं आया, हम दूसरों को क्या न्याय दिलायेंगे, क्या औकात है हमारी। जहां तक राज्यमंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल का सवाल है वे भी उत्तर देते समय भावुक हो गये और रो पड़े। उल्लेखनीय है कि उनके बेटे के साथ भोपाल में पुलिस ने दुर्व्यवहार किया था, वे स्वयं भी रात में थाना पहुंचे थे, उनका भी यह दर्द सामने आ गया। प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने स्वयं को संभालते हुए कहा कि अभय मिश्रा के मामले में रिपोर्ट करने वाला और खात्मा लगाने वाला एक नहीं है, एफआईआर हरिचरण पटेल ने की और विवेचना राजेश तिवारी ने, दोनों ही उपनिरीक्षक स्तर के हैं। भोपाल से अधिकारियों को भेज कर उच्च स्तरीय जांच करायेंगे, सभी सुरक्षित हैं किसी के साथ अन्याय नहीं होने देंगे और पुलिस का मनोबल बना रहे इसका भी ध्यान रखा जायेगा। उपनेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे का कहना था कि बेटे का दोष यह है कि वह राजनीतिक परिवार से आता है, झूठी रिपोर्ट लिखाने वाले के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही होनी चाहिये। पुलिस अधीक्षक के विरुद्ध भी विभागीय जांच हो क्योंकि विधायक से जुड़े मामले में उनकी जानकारी के बिना कार्रवाई नहीं हो सकती। कांग्रेस विधायक भंवरसिंह शेखावत का आरोप था कि पुलिस का व्यवहार अब दुर्व्यहार में परिवर्तित हो गया है और पुलिस वाले सड़कों पर दौड़ा-दौड़ा कर पीटे भी जा रहे हैं।

और यह भी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कहना है कि प्रदेश में औद्योगिक विकास का सपना साकार हो रहा है और चम्बल सुनहरा इतिहास लिख रहा है। चंबल की भूमि उपजाऊ है, कमाऊ है और टिकाऊ है, चंबल जैसा टिकाऊ जज्बा और कहीं नहीं दिखता। मुख्यमंत्री के अनुसार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सोच व प्रदेश सरकार के संकल्प के कारण अनेक औद्योगिक इकाइयां प्रदेश में आरम्भ हुई हैं। इनके प्रारम्भ होने से ग्वालियर-चम्बल के बेरोजगार युवकों को रोजगार उपलब्ध हो रहा है। डॉ. यादव का कहना है कि प्रदेश में औद्योगिक विकास के लिए हरसंभव कार्य किया जा रहा है। इनवेस्टर समिट में रीजनल इंडस्ट्रीज कान्क्लेव से न केवल देश बल्कि विदेश से भी इनवेस्टर को आमंत्रित करने का काम किया गया है जिसके सार्थक परिणाम परिलक्षित हो रहे हैं।

इंदौर को 'वाटर प्लस शहर' का दर्जा दिलाने की कवायद

12 पैरामीटर्स पर चल रही तैयारी, खुले सीवरेज खत्म करने पर जोर

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर को फिर से वाटर प्लस शहर का दर्जा

दिलाने के लिए तैयारियां शुरू हो गई हैं। इसे लेकर 12 पैरामीटर्स पर काम किया जा रहा है। शुक्रवार को मेयर पुष्यमित्र भार्गव ने इस मामले में बैठक ली। इसमें खुले सीवरेज को खत्म करने पर जोर दिया गया। बैठक में जल कार्य प्रभारी अभिषेक शर्मा सहित संबंधित विभाग के अधिकारी भी शामिल थे। मेयर ने 12 मानकों पर खरा उतरने के लिए की गई तैयारियों को लेकर चर्चा की और जरूरी निर्देश दिए। इसमें सीवरेज के पानी को ट्रीटमेंट के बाद ही नदी-नालों में छोड़ने और खुले सीवरेज को खत्म करने पर जोर दिया गया। बैठक में 128 कुओं और बावड़ियों की सफाई के साथ आउट फॉल बंद करने, चैनल सफाई को लेकर निर्देश दिए गए। साथ ही कामों की गुणवत्ता का ध्यान रखने की बात भी कही। गौरतलब है कि स्वच्छता सर्वेक्षण 2021 में इंदौर को भारत का पहला 'वाटर प्लस शहर' घोषित किया गया था।

कानूनविद आनंद मोहन माथुर का निधन

लंबे समय से बीमार थे, आज रामबाग मुक्तिधाम पर होगा अंतिम संस्कार

इंदौर (एजेंसी)। वरिष्ठ कानूनविद और समाजसेवी आनंद मोहन माथुर का शनिवार सुबह लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। वे 97 वर्ष के थे। उनकी अंतिम यात्रा 23 मार्च को सुबह 11 बजे उनके निवास रतलाम कोठी से निकलेगी। अंतिम संस्कार रामबाग मुक्तिधाम पर होगा। उन्होंने वकालत के साथ-साथ सामाजिक चेतना जगाई और अन्याय के खिलाफ कोर्ट से लेकर सड़क तक लड़ाई लड़ी। उन्होंने कॉलेज में अध्यापन का काम भी किया। वे अपने कानूनी ज्ञान और अनुभव का उपयोग पीड़ितों और शोषितों के हित में करते रहे। सिर्फ कोर्ट में ही नहीं बल्कि समय आने पर वे सड़क पर उतरने से भी नहीं हिचकिचाते थे। इंदौर के सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्य में उनकी उपस्थिति महत्वपूर्ण रही है। इंदौर में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कानूनी विशेषज्ञ के तौर पर भारत का नेतृत्व भी किया है।

रोजा इफ्तार के सवाल पर बीजेपी अध्यक्ष की दो टूक

बोले- नहीं होगा, कांग्रेस प्रवक्ता बोले- गंजे को कंघी मिलती है तो वह खुजा कर खून निकालता है

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में बीजेपी बिहार महोत्सव का आयोजन करने जा रही है। इस आयोजन में सीएम और पूर्व केंद्रीय मंत्री भी शामिल होंगे। इस आयोजन के पहले बीजेपी के इंदौर नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा के बयान को लेकर पार्टी को कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। दरसअल, शुक्रवार को सामाजिक समरसता की बात करने वाली बीजेपी के नगर अध्यक्ष मिश्रा ने रोजा इफ्तार को लेकर बयान दिया की 'नहीं होगा'। अध्यक्ष के इस वीडियो पर शनिवार को कांग्रेस हमलावार हो गई है। कांग्रेस नेता ने इस मामले में कहा कि गंजे को कंघी मिलती है तो वह खुजा कर खून निकाल लेता है। इंदौर में शुक्रवार को बीजेपी कार्यालय पर मिश्रा मीडिया से अनौपचारिक चर्चा कर रहे थे। इस चर्चा के दौरान किसी ने उनसे पूछा

की रोजा इफ्तार पार्टी होगी तो इस पर उन्होंने कहा, नहीं होगा, रोजा इफ्तार... सीधा ही सवाल है, नहीं होगा। नगर अध्यक्ष और वहां मौजूद पार्टी के अन्य नेता यह जवाब देने के बाद हंसते हुए चले गए। नगर अध्यक्ष के इस बयान का वीडियो आज सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जिसके बाद कांग्रेस ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी है। कांग्रेस प्रदेश प्रवक्ता अमिनुल खान सूरी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट में लिखा है कि गंजे को कंघी...जब गंजे को कंघी मिल जाती हैं तो वह खुजा-खुजा के सर से खून निकाल लेता हैं।

कांग्रेस ने भी बनाई थी रोजा इफ्तार से दूरी

सीएम हाउस पर शिवराज सरकार में प्रदेश स्तर पर होने वाली रोजा इफ्तार दावत को कमलनाथ ने मुख्यमंत्री बनने के बाद बंद कर दिया था। साल 2018 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने जीत दर्ज कर कमलनाथ ने सरकार बनाई। इसके बाद पहला रमजान साल 2019 में आया। सॉफ्ट हिंदुत्व की तरफ बढ़ चुके कमलनाथ ने इस आयोजन से दूरी बना ली। बरसों की सीएम हाउस रोजा इफ्तार दावत का सिलसिला थमा तो फिर थमा ही रह गया। अगले दो वर्ष कोरोना की सावधानियों के चलते ये आयोजन नहीं हुआ। जबकि वर्ष 2023 में हालात सामान्य होने के बावजूद भी तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस आयोजन से दूरी बनाए रखी।

इंदौर में मार्च-अप्रैल में तीन लाइव कॉन्सर्ट

दिलजीत और हनी सिंह के बाद अब आएंगे अरिजीत, सुनिधि और अल्ताफ राजा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में हनी सिंह और दिलजीत दोसांझ के बाद, मार्च और अप्रैल में तीन और बड़े लाइव कॉन्सर्ट आयोजित होने वाले हैं। इंदौर में 23 मार्च को सुनिधि चौहान, 27 मार्च को अल्ताफ राजा और 19 अप्रैल को अरिजीत सिंह का लाइव कॉन्सर्ट होना है। इन कॉन्सर्ट की जानकारी मिलने के बाद नगर निगम, इंदौर मनोरंजन कर की वसूली को लेकर पहले से ही एक्शन मोड में आ गया है। निगम अधिकारियों ने इन कॉन्सर्ट के आयोजकों को नोटिस जारी कर दिए हैं। बता दें कि इंदौर में हुए दिलजीत दोसांझ और हनी सिंह के कॉन्सर्ट में टैक्स को लेकर हुआ विवाद अभी तक जारी है।

इंदौर में गायक अरिजीत सिंह का कॉन्सर्ट सी-21 मॉल में, सुनिधि चौहान का लाइव कॉन्सर्ट लाभगंगा में, और अल्ताफ राजा का कॉन्सर्ट मार्क क्लब में

आयोजित होने जा रहा है। नगर निगम की प्रभारी अपर आयुक्त लता अग्रवाल ने बताया कि, इन सभी कार्यक्रमों के आयोजन स्थलों के संचालकों को निगम द्वारा नोटिस जारी कर दिए गए हैं। इस नोटिस में संचालकों को निर्देश दिया गया है कि नियमों के अनुसार, इस तरह के आयोजनों में टिकट बिक्री से होने वाली कमाई का 10 प्रतिशत मनोरंजन कर के रूप में जमा करना अनिवार्य है। संबंधित स्थल संचालकों से कहा गया है कि, वे अपने यहां आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के आयोजकों से चर्चा कर यह सुनिश्चित करें कि निर्धारित मनोरंजन कर की राशि सही समय पर जमा कर दी जाए।

इंदौर में दिन का तापमान गिरा, रात रही गर्म

उत्तरी हवाओं ने बदला मौसम का मिजाज, 25 मार्च के बाद बढ़ेगी गर्मी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में पिछले 24 घंटों के दौरान दिन के तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। अधिकतम तापमान 34.6 डिग्री था, जो शुक्रवार को घटकर 33.6 डिग्री सेल्सियस रह गया। यह सामान्य से 2 डिग्री कम रहा। दूसरी ओर, न्यूनतम तापमान में 4 डिग्री की वृद्धि हुई। गुरुवार को यह 17.8 डिग्री था, जबकि शुक्रवार को बढ़कर 21.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जिससे रात के समय गर्मी का असर महसूस हुआ। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्र ने बताया वर्तमान मौसम प्रणाली का प्रभाव 23 मार्च तक रहेगा। 24 मार्च से एक और पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय हो सकता है, जिसका असर प्रदेश में दिखाई देगा।

25 मार्च के बाद बढ़ेगा तापमान

मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार, मार्च के आखिरी सप्ताह में दिन और रात दोनों तापमान में वृद्धि होगी, जिससे गर्मी का असर और बढ़ेगा। आमतौर पर 20 मार्च के बाद तापमान में वृद्धि होती है, लेकिन इस वर्ष उत्तरी पहाड़ी इलाकों में जारी बर्फबारी के कारण हवा की दिशा में बदलाव से तापमान में अस्थायी गिरावट देखी जा रही है। हालांकि, 25 मार्च के बाद अधिकतम तापमान 35 डिग्री सेल्सियस से अधिक होने लगेगा और मार्च के शेष दिनों में यह 36-37 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच सकता है। अप्रैल में तापमान तेजी से बढ़ने की संभावना है।

अब एग्रीकल्चर कॉलेज में रैगिंग

13 छात्रों पर कार्रवाई, होस्टल से निकालने पर हंगामा, 10 घंटे धरने पर बैठे रहे

इंदौर (एजेंसी)। अब शासकीय एग्रीकल्चर कॉलेज में रैगिंग का मामला सामने आया है। शिकायत के बाद कॉलेज के 13 छात्रों पर एंटी रैगिंग कमेटी ने कड़ी कार्रवाई करते हुए उन्हें होस्टल से निकालने सहित कोर्स के दौरान खेल-कूद, सांस्कृतिक व अन्य गतिविधियों से वंचित कर दिया है। चेतावनी दी गई कि अगर भविष्य में वे रैगिंग लेते हैं तो उनके खिलाफ पुलिस कार्रवाई की जाएगी। उन्हें स्कॉलरशिप सहित किसी अन्य योजना का लाभ भी नहीं मिलेगा।

रैगिंग के डर से जूनियर को नहीं देते होस्टल- कॉलेज में जूनियर-

सीनियर के बीच अकसर विवाद होते रहते हैं। रैगिंग की घटनाएं रोकने के लिए फर्स्ट ईयर के छात्रों को होस्टल नहीं दिया जाता। बावजूद रैगिंग का मामला सामने आया है। कुछ सीनियर छात्र कॉलेज आने-जाने वाले फर्स्ट ईयर के छात्र-छात्राओं को रास्ते में रोककर धमकाते थे। इससे परेशान कुछ जूनियर ने फरवरी में यूजीसी की एंटी रैगिंग हेल्पलाइन पर शिकायत की थी। कॉलेज की एंटी रैगिंग कमेटी ने शिकायत पर संज्ञान लेकर जांच की। रैगिंग के आरोप में जिन छात्रों पर कार्रवाई की गई है, उनमें सबसे ज्यादा 6 छात्र (कुंदन सोलंकी, राज पाटीदार, शिवम यादव, कुंदन मालवीय, निक्की किरार, लक्ष्मण सिंह तोमर) बीएससी एग्रीकल्चर फोर्थ ईयर के हैं। 5 छात्र (अंश धार्वे, कुलदीप सिंह चौहान, प्रद्युम्न जाम्बोलकर, कनक चौरे, अंकित सोलंकी) पिछले साल फर्स्ट ईयर में फेल हो चुके हैं। राहुल दांगी और अजय मीणा एमएससी एग्रीकल्चर प्रीवियस ईयर की पढ़ाई कर रहे हैं। उधर, कार्रवाई के बाद शुक्रवार को स्टूडेंट्स ने बवाल मचाया। छात्रों ने कहा बगैर सबूत सिर्फ शिकायत के आधार पर एकतरफा कार्रवाई की गई है। हंगामे के कारण कॉलेज में कोई भी क्लास नहीं लग सकी। बीएससी सेकंड ईयर से लेकर एमएससी तक के कई स्टूडेंट समर्थन में उतर आए। छात्रों का दावा है कि उन्होंने किसी जूनियर की रैगिंग नहीं ली। सुबह साढ़े 10 बजे शुरू हुआ धरना रात साढ़े 8 बजे तक चला।

कान्ह-सरस्वती नदी के तट पर बिछी जल जाजम

विश्व जल दिवस पर जल संरक्षण के लिए भावनात्मक संकल्प, नर्मदा आंदोलन की याद की ताजा

इंदौर (एजेंसी)। कान्ह सरस्वती नदी के कृष्णपुरा छत्री घाट पर विश्व जल दिवस की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को एक अनूठा आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में जल संरक्षण पर औपचारिक चर्चा के बजाय भावनात्मक संवाद हुआ। अभ्यास मंडल द्वारा आयोजित 'जल जाजम' कार्यक्रम में शशिकांत शुक्ला, रामेश्वर गुप्ता और शिवाजी मोहिते ने अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने नर्मदा जल को इंदौर लाने के ऐतिहासिक आंदोलन की कहानी सुनाई। वक्ताओं ने बताया कि यह एक जन आंदोलन था, जिसने सफलता हासिल की। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इसमें तकनीकी विषयों या औपचारिक भाषणों के स्थान पर जल संरक्षण के प्रति लोगों की भावनाओं और संवेदनाओं को जगाने पर जोर दिया गया। नदी के पुनर्जीवन और भविष्य में आने वाले जल संकट के प्रति लोगों को जागरूक किया गया।

कान्ह के पुनर्जीवन के लिए हरसंभव प्रयास- अभ्यास मंडल मध्य भारत का ऐसा

सामाजिक संगठन जिसने दशकों पहले जल के महत्व और भविष्य में शहर की जल मांग की फिक्र उस समय कर के तमाम कठिनाइयां, चुनौतियां और संघर्ष कर के नर्मदा का जल इंदौर लाने में कामयाबी हासिल की, उन कार्यकर्ताओं से बड़ा जल संरक्षक कौन हो सकता है। आज इंदौर का जो मुकाम है, उसका अप्रत्यक्ष कारण नर्मदा के जल की उपलब्धता ही है। वही हमारी यात्रा यहीं नहीं रुकी, हमारी विरासत कान्ह सरस्वती नदी जो इस मालवा के औद्योगिक नगर की जीवन रेखा थी जिसके किनारे बड़े-बड़े ऐतिहासिक घाट बने हैं। लेकिन अव्यवस्था अनदेखी और मानवीय स्वार्थ के कारण अपना अस्तित्व खो चुकी है। उसके पुनर्जीवन के लिए हम हर संभव प्रयास कर रहे हैं।

आस्था, विश्वास और सहयोग का अर्घ्य देने का स्थान

इसी तारतम्य में हमने जल दिवस की पूर्व संध्या पर शहरवासियों और जिम्मेदारों से एक मार्मिक अपील करते हुए कलश में शुद्ध जल भर के कृष्णपुरा छत्री घाट पर खड़े होकर नदी में जल अर्पित किया। जिसका मकसद था कि यह नाला नहीं नदी है। शहर कितना भी विकास कर ले नदी के बगैर सबकुछ अधूरा है। यह कूड़ा, करकट, गंदगी डालने की जगह नहीं बल्कि आस्था, विश्वास और सहयोग का अर्घ्य देने का स्थान है। हमारी यह गौरवशाली नदी वर्तमान की दयनीय स्थिति से उबर कर आने वाले समय में फिर से कल-कल करती बहे। कार्यक्रम में जल संरक्षण से जुड़ी रचनाएं एवं जल के महत्व और उस पर गहराते संकट पर हरेराम वाजपेयी, वैशाली खरे, ग्रीष्म त्रिवेदी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन स्वप्निल व्यास ने किया।

'वर्ल्ड वॉटर डे' पर सेमिनार

जल संकट पर विशेषज्ञों की चेतावनी, वेस्ट वाटर को रीसाइकल करना जरूरी

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में विश्व जल दिवस के अवसर पर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला में सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें विशेषज्ञों ने जल संकट पर गंभीर चिंता जताई। जल वैज्ञानिक तापस सरस्वती ने बताया कि पृथ्वी पर मौजूद कुल जल का केवल 1 प्रतिशत हिस्सा ही पीने योग्य है। उन्होंने कहा कि इस साल विश्व जल दिवस की थीम 'ग्लेशियरों को संरक्षित करना' है। पृथ्वी का 80 ' भाग जल से ढंका है। इसमें से 97.5 प्रतिशत महासागरीय जल है, जो पीने योग्य नहीं है। जल संरक्षण के लिए कई महत्वपूर्ण उपाय सुझाए गए। इनमें आर्टिफिशियल ग्राउंड वॉटर री-चार्जिंग, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, घरेलू पानी का विवेकपूर्ण उपयोग और वेस्ट वाटर

जल संरक्षण में सिंगापुर का उदाहरण- विशेषज्ञों ने सिंगापुर का उदाहरण दिया। वहां पीने के पानी का कोई प्राकृतिक स्रोत नहीं है। पहले वे मलेशिया से महंगा पानी खरीदते थे। अब वे वेस्ट वाटर को ट्रीट करके पीने योग्य बनाते हैं। तालाब संरक्षण समिति की सचिव मेघा बर्वे ने कहा कि जल संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी है। उन्होंने चेतावनी दी कि भविष्य में पीने का पानी दुर्लभ हो सकता है। एक छोटे से लीकेज से सालभर में 1 लाख लीटर पानी व्यर्थ हो जाता है। बड़ी बाल्टी की जगह छोटी बाल्टी और बड़े मग की जगह छोटा मग इस्तेमाल करने से भी जल संरक्षण में मदद मिलेगी। उन्होंने बताया कि इंदौर जैसे शहरों में बाथटब में 100 लीटर पानी खर्च करना सही नहीं है। सिर्फ एक दिन 'वर्ल्ड वाटर डे' मनाने से कुछ नहीं बदलेगा, इसके लिए निरंतर जागरूकता और सही आदतों की जरूरत है। कार्यक्रम में मौजूद सभी लोगों को जल संरक्षण की गंभीरता और इसके समाधान के बारे में जागरूक किया गया।

झ जल विशेषज्ञ डॉ. सुनील

कला

पंकज तिवारी
समीक्षक

जल, जमीन, जंगल से जुड़े कलाकार पवनेन्द्र कुमार

छि टक के रंग कहीं जब भी बिखर जाएगा।
किसी के मन का भाव पल में निखर जाएगा।।
कोई भटका हुआ परिंदा जब भी गुजरेगा।
कसम से चित्र के भावों में उतर जाएगा।।

कृतियां ऐसे ही अनायास कहीं भी, किसी भी रूप में अपने सृजन के द्वार खोल लेती हैं। कलाकार पारंगत हैं या नहीं इस पचड़े में नहीं पड़ती। ये सब कार्य तो कृत्रिम है। बचपन से ही किसी न किसी बहाने रेत के आसपास रहने की वजह से रेत पर ही आकृतियां उकेरने लगे थे कलाकार डॉ. पवनेन्द्र तिवारी। रेत पर चलने हेतु पैरों को बल देना पड़ता है जबकि सृजन हेतु इतने मशक्कत की आवश्यकता नहीं होती हां निर्मिति हेतु हो सकती है। इनके कृतियों में रेत से दो कदम और आगे बढ़ते हुए सागर के मध्य तैरते जीव जंतुओं सा संसार है। जहां मछलियों या और भी जलीय प्राणियों के अपेक्षा उसी आकार में तैरती मनुष्य आकृतियां हैं। रंग भी बेहद ही नजदीक से होकर गुजरते हैं। वहां भी प्रकृति के हरे-भरे वातावरण की दरकार को दिखाने का प्रयास किया है जहां शांत और कोमल रंग शांत और सुकुन से युक्त देश की कल्पना को साकार करते से जान पड़े हैं। आंखें बाहर निकल कर चीजों की गहनता से पड़ताल करती सी मालूम होती हैं। आपस में संवाद रत अधिक आकृतियां लोगों के बीच आपसी बातचीत, सामंजस्यता, एक दूसरे के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाने हेतु गढ़ी गई हैं। गांवों में जमीनों पर, पेड़ों पर या किसी भी धरातल पर बच्चे खेल-खेल में रेखाएं खींचते और गिनते थे फिर जीत हार का निर्णय होता था। खेल पवनेंद्र भी खेलते थे पर इनके रेखाओं में आकृतियां होती थीं, नाक, कान, मुंह के चित्र होते थे। कलाकार बनने के गुण बचपन से ही विद्यवान थे। मन पढ़ाई में नहीं रमता था बल्कि चित्रों के भव सागर में गोते लगाता था। संयोग कह सकते हैं या लगन की पराकाष्ठा का असर कि वहीं पास के ही कला शिक्षक ओ. पी. गुप्ता जी द्वारा लगातार ड्राइंग, पेंटिंग सीखने का मौका मिल गया। जिसका असर ये हुआ कि खुद के विद्यालय में लगातार अनुपस्थित रहने लगे पवनेंद्र कुमार। अंत में पिताजी द्वारा वहां से नाम हटाकर बी.एल.जे. कॉलेज मिर्जापुर भेज दिया गया जहां समय को कुछ और ही मंजूर था। यहां कला शिक्षक अनिल कुमार जी आपके चहेते गुरु बन गये और अब आप तकनीकी पक्ष को मजबूत करते हुए अध्ययन करने लगे। पिताजी का भी सहयोग मिलता रहा। अनिल सर के सानिध्य में अब पवनेंद्र खुल कर रंगों और रेखाओं से बतियाने लगे थे। रियलिस्टिक और क्रिएटिव दोनों पक्षों को समझने का प्रयास करने लगे थे हालांकि क्रिएटिव तो समझ में आता नहीं था पर रियलिस्टिक पर बढ़िया अध्ययन हो गया था। भगवान श्रीकृष्ण और श्रृंगार से संबंधित चित्रों पर खूब काम करने वाले कलाकार पवनेन्द्र बेबाक तरीके से अपनी राय रखते हैं और बताते हैं कि बारहवीं के बाद बाकायदा कला प्रशिक्षण हेतु महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ शक्तिनगर आ गये। जहां बहुत कुछ उतार-चढ़ाव देखने को मिला। जीवन को नये नजरिए से जानने का मौका मिला।

राजीव भैया, पंकज भैया (आप) के कामों ने भी प्रभावित किया पर सबसे अधिक जो बात बनी वह लक्ष्मण प्रसाद सर के सानिध्य प्राप्ति के बाद संभव हो सकी। शक्तिनगर जहां धूल-धक्कड़ तो था पर प्रकृति का साथ भी खूब था। पेड़-पौधे, पहाड़, कोयले की खदान और चिल्का टांड़ जैसे गांवों में घूमते हुए कला छात्रों द्वारा निरंतर अभ्यास किया जाता रहा था। एक बार की बात है सभी के साथ मैं भी लैंडस्केप बनाने बाहर गया हुआ था। अधिकतर लोग लैंडस्केप अच्छा बना रहे थे, ऐसा भी नहीं था कि मैं ही सबसे पीछे था पर जल रंग को साध पाना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल हो रहा था। मेरे बाद भी बहुत से लोग थे जो जलरंग में अभी लड़खड़ा रहे थे, खड़े होने का प्रयास कर रहे थे। छोटे आकार के पेपर पर पेड़ बनाना था। आज नेचर डायलॉग सिरीज़ पर सिद्धहस्त तरीके से ढेरों काम करने वाले पवनेन्द्र के साथ यह घटना तब की भी है जब वो बड़े ही मन से चित्र निर्मिती में रमे हुए थे और पेड़ बना रहे थे पर गजब हो गया पेड़ तो पेपर से बड़ा हो गया, पेपर से बाहर भागने लगा पेड़। वहां मौजूद लोगों ने इस

लैंडस्केप को देखकर उनकी हंसी भी उड़ाई यहां तक कि राजीव भैया ने तो पीठ पर धप्प से दे मारा था, हम लोग सीनियर भैया लोगों की इज्जत किया करते थे, मुझे सीखने का साहस मिला। कुछ लोग तो यहां तक बोल गये कि मोटे शरीर के साथ ही इसकी बुद्धि भी मोटी हो गई है। मुझे दुख तो हुआ पर मन में जैसे कुछ हुआ भी, पेंटिंग करने का जज्बा और जुनून के साथ जाग उठा और मैं लक्ष्मण सर के बताए अनुसार सीखने लगा। ये सारी कहानी चिल्काटांड़ के ललित कला भवन में घट रही थी। भवन का नामकरण भी हमीं लोगों ने किया था। कला छात्रों का लंबा समूह रहता था यहां। आस-पास के लोगों के लिए कला भवन पहेली सा बन गया था। किसे पता था कि कला भवन में तैयार हो रहे ये हीरे आगे चलकर देश-विदेश में अपनी चमक छोड़ेंगे। कहानियां यहां से अभी भी बहुत हैं। लक्ष्मण सर ने कहा था कि जितना अधिक प्रैक्टिस करोगे दक्षता के उतने ही करीब पहुंचोगे बस मैं लगातार लैंडस्केप करता रहा। सर ने फिर डेमो भी देकर सिखाया। लगातार अभ्यास से मेरे अंदर, मेरे काम के अंदर बहुत अधिक परिवर्तन हुआ। रंगों का असली खेल तो अब शुरू हुआ था। मजा आने लगा था कृतियां बनाने में। फिर आपका (पंकज तिवारी) काम लखनऊ में सेलेक्ट हुआ। जब आप कृतियों के साथ लखनऊ जा रहे थे, स्टेशन पर बहुत देर तक आपके कला शैली पर चर्चा हुई थी। बिल्कुल ही शांत सा हरे-भरे पेड़-पौधों और पहाड़ों के बीच घिरा वह स्टेशन कलाकारों के लिए बहुत कुछ दे सकता था और मुझे उम्मीद है कि वहां से कला छात्रों ने बहुत कुछ पाया भी होगा। तान, पोत, लय सब कुछ तो था वहां के परिवेश में। पटरियों पर लगातार चलते हुए कैंपस पहुंचना, रास्ते में कहीं भी बैठकर नेचर स्टडी करना ये सब थाती ही तो थी वहां की। दूर पहाड़ी पर कोयले के काम पर लगी पीली मशीनें क्या किसी कलाकृति से कम थी। आपकी अधिकतर कृतियां तो वहीं आस-पास के पेड़ों को देखकर ही बनी है। चिल्का झील, शिव मंदिर, ज्वालामुखी मंदिर सब हमारे मन मस्तिष्क पर आज भी वैसे ही उपस्थित हैं जहां से चीजें समय के साथ धीरे-धीरे फलक पर उतरती रहती हैं।

राजीव भैया की ड्रॉइंग मुझे बहुत अच्छी लगती थी। शक्तिनगर ने मुझे खूब अच्छे से गढ़ा है। हर परिस्थितियों से जूझना-लड़ना सिखाया है। बड़े शहरों की अपेक्षा वहां की गति बड़ी धीमी थी पर कच्ची मिट्टी को गढ़ने में काफी हद तक वहां की परिस्थितियों ने साथ दिया। वहां से निकलने के बाद फिर करीब महीने भर लक्ष्मन सर के साथ रहते हुए मैंने खूब सीखने का प्रयास किया। लक्ष्मन सर ने ही पोर्टफोलियो और फाइल बनाना भी सिखाया उसके बाद फिर मैं कुरुक्षेत्रा पहुंच गया।

वहां सुशील पाल को काम करते हुए देखा, बहुत ही सुन्दर काम था। उनके काम ने भी बहुत प्रभावित किया। राकेश बानी सर, राम विरंजन सर एवं लक्ष्मण प्रसाद सर इन तीनों सर के कामों से मैं बहुत ही प्रभावित हुआ। कुरुक्षेत्र में कार्य करते हुए लगातार प्रदर्शनियों एवं प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने लगा और चयनित एवं पुरस्कृत भी होता रहा। यहां से शिक्षा पूर्ण करने के बाद फिर सुभारती विश्वविद्यालय में नियुक्त हो गया। काम निरंतर जारी रहा। कई सिरीजों पर मैंने काम किया पर मुख्य जो रहा वो ये कि समाज, सुकून, प्रकृति प्रेम, मानवता, मुस्कान, महिला के प्रति सम्मान जैसे भाव और विचारों के इर्द-गिर्द ही घूमती रही मेरी कलाकृतियां। बहुत कठिन स्ट्रोकों से भी मैं बचता हूं। बिल्कुल ही सरल रेखा, रंग, आकृतियां यही हमारा रचना संसार है, यही हमारी दुनिया है। इसी बीच मैंने पी.एच.डी. की उपाधि भी प्राप्त कर ली, कई सारे पुरस्कार भी मुझे मिले। कोरोना काल में भी खूब सारे कृतियों का सृजन हुआ। वायरस के प्रभाव ने लोगों को यहां तक डरा दिया था कि मनुष्यता, मानवता नष्ट सी जान पड़ने लगी थी। लोग एक दूसरे से दूरी बना लिए थे, छूना तो दूर पास तक नहीं फटकना चाह रहे थे। ततैया के छत्तों पर भी मैने खूब काम किए। अलीगढ़ से पुरस्कृत भी हुआ काम। कृतियों में प्रकृति, गांव, इमोशंस दिखाना मेरी प्राथमिकता रही है। मोरपंख तितलियां, ज्यामितीय आकृतियां, फूल-पत्तियां यही मेरे कृतियों में मूल है। मिर्जापुर से निकल कर आज यहां हूं, खूब खुश हूं पर गांव मेरे भीतर है, मैं गांव का हूं।

दो कविताएं

डॉ. वीरेन्द्र प्रसाद

शेष कितना तमस

शेष कितना तमस, शेष कितनी रात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।
मन का दीपक, शत झंझा में निश्चल
तन की वर्ती, कोटि-कोटि उर्मी में अतल
हर लहरों के पार गई, मानव की बात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।

ज्वारों पर चलना है, अंगारों पर पलना है
कादो की गहराई में, जलजात-सा खिलना है
छीजन से डरता नहीं, बढ़ता प्रलय झंझावात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।

धूम लेखा स्निग्ध है, जीवट पर मुग्ध है
तिमिर वात्याचक्र भी, नहीं करते उन्मुग्ध हैं
पंथी तू बढ़ता रहे, अगवानी को खड़ा है प्रात
शेष कितना तमस, शेष कितनी रात
एकाकी ही चला हूँ, एकाकिनी बरसात।

तुम्हारे साथ रहकर

तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर
छोटी है यह जिंदगी छोटी हो गई रहगुजर।

सारी दिशाएँ, पास मेरे मलयज खुशबू बिखेरे
सिमट गया संसार सारा बनके आँगन सवेरे
एकांत नहीं मिलता न बाहर, न भीतर
तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर।

मतलब है हर बात का खिड़की से आते वात का
धूप दीवारों पर चलता तृण के अंबुजात का
टकराता मेघों से अब प्रणय सोपान चढ़कर
तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर।

चीर सकता हूँ शिखर, सोख सकता हूँ सागर
तेरे संग, असीमित बल उम्मीद से, जाता निखर
जीत लूँगा हर जहाँ को हारकर तुमसे मगर
तुम्हारे साथ रहकर महसूस हुआ अकसर
छोटी है यह जिंदगी छोटी हो गई रहगुजर।

एक घर चाँद पर : विज्ञान कथा

पुस्तक चर्चा

जवाहर चौधरी

मानव सभ्यता के विकास में चांद का भी एक महत्वपूर्ण स्थान है। चांद के रहस्य समझने के लिए आदिकाल से मनुष्य आसमान ताकता रहा है। 'एक घर चांद पर' शैलेष वाणी की एक विज्ञान कथा है। शैलेष खुद विज्ञान के अध्येयता और शिक्षक हैं। यदि वे शिक्षक नहीं होते तो अंतरिक्ष वैज्ञानिक के रूप में काम कर रहे होते ऐसी उनकी इच्छा थी। स्पेस साइंस में उनकी विशेष रूचि है। इस पुस्तक के पहले वे अंग्रेजी में विज्ञान उपन्यास 'बियांड द अर्थ' लिख चुके हैं जो काफी चर्चित रहा है। प्रस्तुत पुस्तक तथ्यों पर आधारित है जिसे लिखने में शैलेष ने दस वर्ष का समय लिया है। बच्चों बड़ों और शिक्षकों के लिए यह पुस्तक समान रूप से रोचक है।

चांद को लेकर हर व्यक्ति के मन में तमाम प्रश्न होते हैं। इन्हीं जिज्ञासाओं के साथ पुस्तक आरंभ होती है। राम, जिसके माध्यम से कथा कही गई है, चांद पर जाने का सपना देखा है। राम को एक दिन आकाश में रहस्यमय रोशनी दिखाई देती

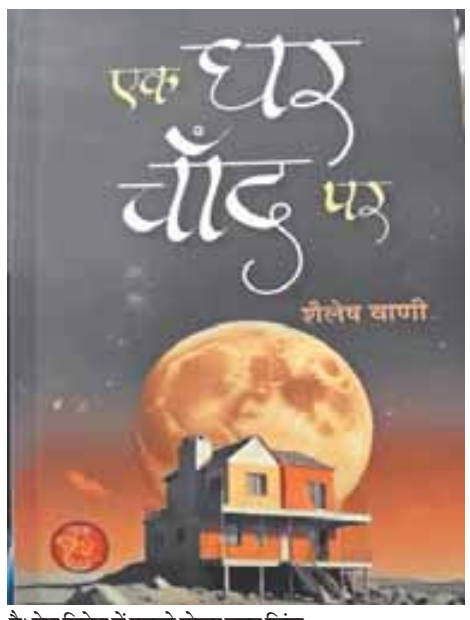

है। देश विदेश में इसको लेकर बहुत चिंता होती है। पता चलता है कि वह एक उड़न तश्तरी थी। पुस्तक एलियन के विषय में चर्चा करती है। राम के साथ एक टीम तैयार होती है जो मिशन-मून पर निकलती है। यान चांद पर उतरता है और पानी की खोज में लग जाता है। उन्हें चंद्रमा की धरती पर अनेक विचित्रताएं देखने को मिलती हैं। इसी के साथ टीम को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। संघर्षपूर्ण स्थितियों के साथ वे वापस धरती पर लौटते हैं। किताब रोचक है, बच्चों को एक काल्पनिक उड़ान का अवसर देती है। पाठकों में स्पेस साइंस के प्रति इससे रुचि बढ़ेगी। शैलेष की भाषा सरल और रोचकता लिए हुए है।

पुस्तक की छपाई अच्छी है और त्रुटि रहित है। कीमत रू. 250 है जो सामान्य पाठक के लिए अखरने वाली बात हो सकती है। पुस्तक के अगले संस्करण में मूल्य में कमी की अनुशंसा की जाती है। उम्मीद है कि शैलेष की यह किताब उनके आगे के लेखन के लिए मार्ग प्रशस्त करेगी।

पुस्तक - एक घर चांद पर
लेखक - शैलेश वाणी
प्रकाशक - युवा हिंदी दरियागंज दिल्ली
मूल्य - 250

कविता

खुदा के नाम

कमलेश कुमार दीवान

झुकते हैं ख़ास-ओ-'आम भी अपने खुदा के नाम
सजदे में नाम ए अनाम भी अपने खुदा के नाम!
इब्तिदा ए काइनात का,किसी को भी पता नहीं
इसी वास्ते से ये पयाम भी अपने खुदा के नाम!
सब जानता है ख्याल भी उस परवरदिगार को
ये अमन चैन के पैगाम भी अपने खुदा के नाम!
यह माह बहुत पाक है इबादत से अमन चैन
सहर है अब ये शाम भी अब तो खुदा के नाम!
रमज़ान की चाहत सब अकीदत में हैं 'दीवान
यही इलहाम है सलाम भी अपने खुदा के नाम!

लघुकथा

सुरेश सौरभ

खुदाई

बेरोजगार बेटे से बाप बोला ,'आजकल कहाँ जाते हो कोई काम मिल गया क्या?'
बेटा-'जी पापा कब्रें खोद रहा हूँ।'
बाप की बांछें खिल गईं।

मेरी कविता

अनुपमा अनुश्री, भोपाल

ध्यान का पुंज है
ज्ञान का कुंज है
शब्दभावों की अठखेली है
अंतः प्रेरणा से बह निकली है
कविता मेरी अंतरंग सखी है
कि जगा देती है कभी भी
हाथ पकड़ कर उठा देती है
कलम थमा जता देती है
कि उसे भावों की दुशाला ओढ़
वक्त के शिलालेख पर सजना है।

चलना है उन सभी रास्ते पर
जो आदम को मानवीय
गहनों से अलंकृत करते हैं।
हृदयों में संवेदनाओं
की उजास भरते हैं।

उमगती यह नदी यूँ
अचानक उतरती है
रंगों की नूतन झालर बुनती है
उसे तपना है, निखरना है
सूर्य सम काँतिवान बनना है
कि आखरों से टपकेगी रोशनी
निर्मल कर देगी मन के अंधकूपों को
भर देगी उदासी की खाई
जन्म देगी नयी जिंदगी को।

भगत सिंह : हों फरिश्ते भी फिदा जिन पर ये वह इंसान है

शहीद दिवस पर विशेष

श्याम बोहरे
लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

हमारी आजादी का आंदोलन सिर्फ राजनीतिक आजादी पाने तक ही सीमित नहीं था, आर्थिक और सामाजिक आजादी भी प्राप्त करते हुए भारत को लोकतांत्रिक, पंथनिरपेक्ष देश बनाने की भी भरपूर कोशिश भी थी। बराबरी और न्याय पर आधारित मानवीय चेतना सम्पन्न वैज्ञानिक दृष्टि के साथ प्रगतिशील समाज बनाना भी आजादी के आन्दोलन का प्रमुख उद्देश्य था। यह बात अलग-अलग विचारधारा के नेताओं की कोशिशों में साफ नजर आती थी। भले ही आजादी के लिए संघर्ष करने वाले नेताओं के रास्ते, तरीके और विश्वास अलग-अलग रहे हों, परंतु व्यापक लक्ष्यों में समानता थी। इसीलिए अलग-अलग सामाजिक राजनीतिक सोच रखने वाले नेता एक दूसरे के प्रतिद्वन्दी या दुश्मन नहीं थे, वे एक दूसरे का सम्मान करते हुए अपने-अपने तरीके से आजादी के लिए संघर्ष कर रहे थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, भगतसिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों की सामाजिक और राजनीतिक सोच और रास्ते अलग-अलग थे पर मंजिल एक थी। हालात आज जैसे तो बिल्कुल नहीं थे जहां अलग राय रखने वाले को देशद्रोही, अपराधी और दुश्मन करार दिया जाता है।

आजादी के आंदोलन की विभिन्न धाराओं का व्यापक लक्ष्य हमें भारत के संविधान की उद्देशिका में नजर आता है। जहां समता, पंथनिरपेक्षता, न्याय जिसमें राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक न्याय शामिल है, बंधुत्व और वैज्ञानिक दृष्टि की अभिव्यक्ति स्पष्ट है। आजादी के साथ-साथ भारत को समतावादी, शोषण विहीन प्रगतिशील राष्ट बनाने के लिये प्रतिबद्धता भगतसिंह के शहादत दिवस पर उन्हें याद करना, उनके आदर्शों को, उनकी विचारधारा को समझना आज पहले से ज्यादा जरूरी लगता है क्योंकि, लंबे संघर्ष के बाद आजादी के आंदोलन में विकसित मूल्यों पर गंभीर संकट मंडरा रहा है।

भगत सिंह की फांसी के बाद 'भगतसिहं तू जिंदा है, हर एक लहु के कतरे में' देश के नवयुवकों के दिलो-दिमाग में लंबे समय तक रहा। स्वयं भगतसिंह भी सोचते थे कि उनकी शहादत इंकलाब लाने के लिए नौजवानों को प्रेरित करेगी। भगतसिंह की यह सोच केवल भावनात्मक ज्वार नहीं थी, उनका पक्का भरोसा भी था। उनका यह विश्वास उनके इस कथन से समझा जा सकता है।

फांसी के एक दिन पहले 22 मार्च 1931 को उसी जेल के वार्ड नंबर 14 के अन्य बंदियों ने भगतसिंह के पास संदेश भेजा कि फांसी से बचाने के लिए इन अंतिम घड़ियों में भी शायद कुछ किया जा सके। भगतसिंह का उत्तर था, 'जीवित रहने की इच्छा कुदरती तौर पर मुझे भी होना चाहिए- मैं इसे छिपाना नहीं चाहता। लेकिन मेरा जिंदा रहना एक शर्त पर है, मैं बंदी होकर या पाबंद होकर जिंदा नहीं रहना चाहता।

मेरा नाम हिन्दुस्तानी इंकलाब का चिह्न बन चुका है और क्रांतिकारी पार्टी के आदर्शों और कुर्बानियों ने मुझे बहुत ऊंचा उठा दिया है। बहादुरी के साथ हँसते-हँसते मेरे फांसी पर चढ़ जाने की सूरत में हिन्दुस्तानी माताएं अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश के लिए कुर्बान होने वालों की गिनती इतनी बढ़ जायेगी कि इंकलाब को रोक पाना साम्राजवादियों की तमाम शैतानी शक्तियों के हाथ में भी नहीं रहेगा।

भगतसिंह का यह कथन केवल वक्ती भावनात्मक जज्बा नहीं था। यह उनका सुविचारित, सुनियोजित रणनीति का फैसला था। जब 8 अप्रैल 1929 को दिल्ली की केन्द्रीय असेम्बली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' व 'ट्रेड डिस्प्यूट बिल' के खिलाफ धमाका करने का फैसल हुआ, तब भगतसिंह के साथियों ने बम फेंकने के बाद उन्हें सुरक्षित असेम्बली से बाहर निकालने की बात कही, तब भगतसिंह ने कहा कि नहीं, 'मैं गिरफ्तार होकर मुकदमे का सामना करूंगा। पैरवी के दौरान मैं यह बताउंगा कि ''बहरों को सुनने के लिए गर्जना की जरूरत है।'' यही बात असेम्बली में बम फेंकने के बाद बांटे गये पर्चों में तफ्सील से लिखी थी। भगतसिंह का सोचना था कि मुकदमे के दौरान वे साम्राज्यवादी हुकुमत के अन्याय और अपराध को सार्वजनिक करते हुए, इंकलाब की जरूरत पर रोशनी डालेंगे। इस तरह वे कौम का राजनैतिक शिक्षण कर सकेंगे, जिससे नौजवान इंकलाब के लिए तैयार होंगे। शहीद-ए आजम भगतसिंह को उनके विचारों और कथनों के माध्यम से समझने की कोशिश करते हैं।

''आन्दोलन के उतार-चढ़ाव के बीच प्रतिकूल वातावरण में कभी-कभी ऐसे क्षण भी आते हैं, जब एक-एक करके सभी हमराही छूट जाते हैं, बिछड़ जाते हैं। उस समय मनुष्य सांत्वना के दो शब्दों के लिए भी तरस उठता है। ऐसे क्षणों में भी विचलित न होकर जो लोग अपनी राह नहीं छोड़ते, इमारत के बोझ से जिनके पैर नहीं लड़खड़ाते, कन्धे नहीं झुकते, जो तिल-तिल कर अपने आपको इसलिए गलाते रहते हैं, इसलिए जलाते रहते हैं कि जोत मध्यम न पड़ जाये, सुनसान डगर पर अन्धेरा न छा जाए, ऐसे लोग ही मेरे सपनों को साकार बना सकेंगे।''

भगतसिंह असाधारण साहस और प्रतिभा के जोशीले नवजवान थे। गहन और गम्भीर अध्ययन ने भगतसिंह की प्रतिबद्धता और प्रतिभा को निखार कर उन्हें मुकम्मिल क्रान्तिकारी बनाने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने रूसी क्रांति, सोवियत संघ आयरलैंड, फ्रांस, भारत का क्रांतिकारी आन्दोलन, अराजकतावाद और मार्क्सवाद सहित अनेकों विषयों पर विस्तृत अध्ययन किया था। उनके संबंध में कहा जाता था कि, वह पुस्तकें निगलता है। सेन्ट्रल जेल से अपने मित्र जयदेव को पत्र लिखकर जो किताबें भेजने को कहा था। उनकी बानिगी देखिए - मेटीरियलिज्म लेखक कार्ल लीब्कनेख, बी.रसेल द्वारा रचित व्हाई मेन फाइट सोवियत एट वर्क, कोलेप्स ऑफ सेकेण्ड इन्टरनेशनल, लेफ्टविंग - कम्युनिज्म, प्रिंस कोपाटकिन की म्युचुअल एड, फील्ड फेक्ट्रीस एण्ड वर्कशाप्स, मार्क्स की सिविल वार इन फ्रांस, लैण्ड रेवाल्युशन इन एशिया, अप्टन शिंकलियर की स्पाई, थ्योरी ऑफ मेटेरियलिज्म लेखक बुखारिन आदि। पुस्तकों की संक्षिप्त सूची से भगतसिंह के सोच की झलक मिलती है।

अंग्रेजी में कहावत है कि व्यक्ति की पहचान यह भी है कि वह किन पुस्तकों की संगत में रहता है। गहन अध्ययन और सामाजिक, राजनैतिक विषयों पर चिंतन और लेखन के माध्यम से भगतसिंह ने समाज को जो शिक्षण किया वह अमूल्य उपहार के रूप में सदियों तक समाज को मानवीय मूल्यों, समतावादी समाज निर्माण आदि विषयों पर समाज का शिक्षण करता रह सकता है, बशर्ते बौद्धिक वर्ग उसे गम्भीरता से लेकर कोशिश तो करे। सरकारें तो यह काम करेंगी नहीं। भगतसिंह ने समाजोपयोगी सार्थक चिंतन और लेखन अनेक विषयों पर किया है। देश की सभी सरकारों ने पूरी शिद्दत के साथ भगतसिंह के विचारों को समाज में आने से रोका, तभी तो उनके महान विचारों को सरकारों ने प्रकाशित और प्रसारित नहीं किया, शिक्षण का विषय नहीं बनाया। यह तो भगतसिंह के विचारों की तेजस्विता और ऊर्जा है, जिसके कारण घोर उपेक्षा के बावजूद उनके विचारों का ओज आज भी कायम है।

भगतसिंह ने जिन विषयों पर लिखा है उनके कुछ नाम यहां देखिये। पंजाब की भाषा लिपी सत्याग्रह, हड़तालें, धर्म और आजादी की जंग, अछूत का सवाल, विद्यार्थी और राजनीति, नौजवान भारत सभा का घोषणापत्र, हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातंत्र सेना (असेम्बली में बम फेंकने के बाद बांटा गया पर्चा), विद्यार्थियों के नाम संदेश, असेम्बली बम केस में दिए गये बयान, बम का फलसभा (दर्शन) में हिन्दुस्तानी इंकलाब का चिन्ह, ड्रीमलैंड की भूमिका, इन्कलाबी कार्यक्रम का प्रारूप, कौम के नाम संदेश, जंग अब भी जारी है, मैं नास्तिक क्यों हूं? षडयंत्र क्यों होते हैं और कैसे रूक सकते हैं? साम्प्रदायिक दंगे और उनका इलाज, आयरिश स्वतंत्रता युद्ध, कूका विद्रोह, समय-समय पर लिखे समसामयिक विषयों पर अनेकों लेख, पत्र आदि।

व्यापक ब्यौरे के लिए तो अनेकों ग्रन्थ लिखे जाने चाहिये। प्रोफेसर चमनलाल, प्रोफेसर जगमोहन सिंह, निशांत नाट्य मंच सहमत सहित प्रगतिशील साथियों और संस्थाओं ने भगतसिंह के लेख, पत्र, संदेश और और अन्य दस्तावेज तैयार किये। सीमित साधनों, सरकारों की बेरूखी, सामाजिक चेतना के अभाव और पूंजीवाद के प्रभाव के बावजूद भी भगतसिंह के विचार जनमानस के सार्थक सामाजिक, राजनैतिक चिंतन की क्षमता रखते हैं। जीवन में अध्ययन के महत्व को उनके इस कथन से समझ सकते हैं, ''मेरे दिमाग के हर कोने से एक ही आवाज रह-रहकर उठती है- अध्ययन करो। स्वयं के विरोधियों के तर्कों का सामना करने के लायक बनाने के लिए अध्ययन करो। अपने विचार के समर्थन में तर्कों से लैस होने के लिए अध्ययन करो।''

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

जयंती पर विशेष

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

डॉ. राम मनोहर लोहिया : गरीबों का अपना आदमी

लोहिया ने सिद्धांत दिया कि ''कथनी और करनी'' में एकता होना चाहिए। यानि बोली अलग और आचरण अलग इस फर्क को मिटाना जरूरी है। आमतौर पर राजनेता भाषणों में बहुत उदार और मीठे होते है, परन्तु आचरण भिन्न होते हैं। भारतीय राजनीति की इस फैलती महामारी के प्रति लोहिया ने देश को सावधान किया और एक अर्थ में गाँधी जी के और उनके बताए सत्य के मार्ग की ओर मोड़ने का प्रयास किया।

50 के दशक से डॉ. लोहिया ने जिन बातों को कहना शुरू किया था वे समाज को बदलने वाली थी और भारतीय राजनीति के जड़ बन रहे चरित्र पर चोट करने वाली थी। आजादी और महात्मा गाँधी की मृत्यु के बाद विशेषतः जिस प्रकार कांग्रेस क्रमशः सत्ता लोलुप, अवसरवाद, परिवारवाद और राजनैतिक पतन के रास्ते पर जाने लगी थी और देश को गाँधी के रास्ते से भटकाने लगी थी ऐसे दौर में डॉ. लोहिया ने उन कमजोरियों को उजागर किया और उन्हें सुधारने के उपाय भी बताए। सात क्रांतियों के माध्यम से लोहिया ने कहा कि आज दुनिया को सात क्रांतियां जरूरी हैः- आर्थिक-राजनैतिक-सामाजिक-लेगिंक-रंग आधारित, विषमताओं को मिटाना, विकेन्द्रीकरण-निशस्तीकरण और विश्व संसद। लोहिया प्रखर राष्ट्रवादी थे परन्तु अपने आप को विश्व नागरिक मानते थे। वे चाहते थे कि दुनिया की चुनी हुई संसद बने और दुनिया एक राजनैतिक इकाई बन जाए।

लोहिया ने सिद्धांत दिया कि ''कथनी और करनी'' में एकता होना चाहिए। यानि बोली अलग और आचरण अलग इस फर्क को मिटाना जरूरी है। आमतौर पर राजनेता भाषणों में बहुत उदार और मीठे होते है, परन्तु आचरण भिन्न होते है। भारतीय राजनीति की इस फैलती महामारी के प्रति लोहिया ने देश को सावधान किया और एक अर्थ में गाँधी जी के और उनके बताए सत्य के मार्ग की ओर मोड़ने का प्रयास किया।

यह वह काल था जब भारतीय राजनीति राजनैतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र की समाप्ति की ओर बढ़ रही थी। दलों के नेतृत्व स्वयं भू निर्णायक और निरंकुश बन रहे थे। कार्यकर्ताओं की उपेक्षा शुरू हो चुकी थी और शीर्ष व जमीन के रिश्ते टूट रहे थे। एक तरफदलों में आंतरिक लोकतंत्र के प्रति उनकी चिंता थी और दूसरी तरफआंतरिक लोकतंत्र का अर्थ एक प्रकार की अराजक आजादी में न बदल जाए यह भी उनकी चिंता थी। इसलिए डॉ. लोहिया ने राजनैतिक सिद्धांत गढ़ा और कहा कि ''वाणी की स्वतंत्रता होना चाहिए और कर्म पर नियंत्रण होना चाहिए''। याने दल के भीतर कार्यकर्ता को बोलने की पूर्ण आजादी हो इस आजादी को लेकर वह नेतृत्व का कोपभाजन न बने और एक बार जो निर्णय बहुमत से हो जाए तो फिर उसका पालन हो।

राजनीति और धर्म के रिश्तों को लेकर भी देश में एक प्रकार की बहस शुरू हुई थी। राजनैतिक दलों में एक धड़ा था जो मार्क्स की तर्ज पर धर्म को अफीम घोषित कर सम्पूर्णतः नकारना चाहता था और दूसरी तरफएक जमात थी जो धर्म को पाषण पूजा-परम्पराओं और कट्टरताओं में जकड़ कर रखना चाहती थी। इस द्वन्द का मार्ग भी लोहिया ने अपने एक कथन से बताया कि, ''राजनीति अल्पकालीन धर्म है, और धर्म दीर्घकालीन राजनीति'' याने लोहिया ने समाज को बदलने के लिए कम समय और कुछ समय के सिद्धांत कमोवेश स्थाई व शाश्वत नैतिक मूल्य के बीच संतुलन साधना राजनीति का प्रमुख कर्म है, निरूपित किया था। देश के सामने उपस्थित गैर बराबरियों को मिटाना- इंसान इंसान के फर्क को मिटाना, समता और सम्पन्नता को एक साथ एक बराबरी पर रखना उनका लक्ष्य था। यह राजनीति के लिए धर्म मूल्य थे और धर्म का काम एक नैतिक और सामाजिक मूल्यों पर आधारित व्यक्ति और समाज का निर्माण करना याने दीर्घकालीन राजनीति। इसलिए लोग याने समाज में प्रचलित ईश्वरीय प्रतीकों को एक नये दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया। जिसमें उनके उन गुणों या मूल्यों को स्वीकार कर लिया जाए जो समाज हेतु अनुकूल है और जो गैर जरूरी घटनाएं या सूचनाएं है उन्हें छोड़ दिया जाए। इसलिए लोहिया ने कहा कि, हमें ''नीर, क्षीर, विवेक'' को कसौटी बनाना चाहिए। हमारे यहाँ पुरानी कहावत है ''साधु ऐसा चाहिए जैसा सूप सुभाय, सार-सार को गहि रहे धोथा देय उड़ाए'' लोहिया ने भारतीय जीवन में घुले मिले राम, कृष्ण, शिव को इसी कसौटी पर रखकर स्वतः नास्तिक होते हुए भी उपयोगितावादी, आस्तिकता का मार्ग बताया।

लोहिया ने महात्मा गाँधी के द्वारा बताई गई ''आखिरी पंक्ति के आखिरी आदमी'' को उठाने की कसौटी को जमीन पर उतारा। उन्होनें 50 के दशक से ही दूरस्थ और संघन वनाचलों में रहने वाले आदिवासियों को अपने अधिकारों के लिए लोकतांत्रिक तरीके से लड़ना सिखाया। बच्चों से लेकर बड़ों तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक के सभी वन क्षेत्रों के आदिवासी क्षेत्रों के निवासियों को अपने समतावादी आंदोलन से जोड़ा। आदिवासियों की जमीन के अधिकार-उनकी सभ्यता का संरक्षण सिखाकर लोहिया ने लगभग देश के सभी आदिवासी अंचलों में नये आदिवासी नेतृत्व को खड़ा किया। उन्होंने हिन्द किसान पंचायत के नाम से किसानों का संगठन खड़ा कराया और कृषि क्षेत्र की बुनियादी या मानवीय समस्याओं के हल को सामने रखकर दाम बांधो नीति, फसलों का उतार-चढ़ाव-शहरों और गाँव

के बीच का फर्क मिटाना आदि लक्ष्य हिन्द किसान पंचायत के माध्यम से प्रस्तुत किए। और जगह-जगह जन आंदोलन खड़े किए। उन्होंने निजी क्षेत्र की लूट और संगठित क्षेत्र के भ्रष्टाचार पर ऊंगली उठायी व दोनों की कमियों और अच्छाईओं को उजागर कर संतुलित समाजवादी व्यवस्था, सरकारीकरण के बजाय सहकारीकरण का मार्ग बताया।

लोहिया ने न केवल गरीबों, उपेक्षितों और वंचितों के साथ रिश्ता जोड़ा, उनकी पीड़ाओं को उकेरा, उनके हल सुझाएं-उन्हें बोलने की जबान दी और उनके आत्म विश्वास को जगाने के लिए ऐसे प्रतीक खड़े किए जो उन वंचित समाजों में उत्साह पैदा कर सके। लोहिया ने आज के छत्तीसगढ़ के वनांचल जो कि सिहावा नगरी के नाम से जाना जाता है, जो उनके काल में याने आज से लगभग 70 वर्ष पहले एक दुगर्म और अगम्य स्थान जैसा था वहाँ जाकर आदिवासियों को जमीन के अधिकार के प्रति जागरूक किया। इस आंदोलन में शहीद सुखराम नागे, समरीन बाई, विसाईन बाई, मगलूराम जैसे सेकड़ों संघर्षशील आदिवासियों नेताओं को तैयार किया और उस काल के दौरान जो आदिवासी शहरी बाबू को देखकर डरकर छुप जाता था उसे बोलना, लड़ना सिखाया उसमें आत्मविश्वास जगाया और उसे वैश्विक बराबरी से जोड़ा। लोहिया ने राय बरेली में स्व. फिरोज गाँधी के खिलाफस्व. नंद किशोर नाई को लोकसभा का प्रत्याशी बनाया। ग्वालियर संसदीय क्षेत्र से महारानी विजया राजे सिंधिया के खिलाफ सुक्खोरानी नामक जमादारीन को खड़ा किया। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ खुद खड़े हुए और एक गरीब व्यक्ति भी प्रधानमंत्री और राजा-महाराजा के खिलाफ खड़ा हो सकता है, यह आत्मविश्वास पैदा किया।

देश के गरीबों के साथ किसान, मजदूरों के साथ उनका नाता इतना गहरा बन चुका था यह उस समय नज़र आया जब लोहिया बीमार होकर दिल्ली के सरकारी अस्पताल में भर्ती थे। रीवा की एक पान बेचने वाली महिला लोहिया के बीमारी के दिन से अपनी दुकान बंद कर दिल्ली पहुंची थी और तत्कालीन विलिंगडन अस्पताल के सामने फुटपाथ पर दिन-रात बैठकर लोहिया के स्वस्थ होने का इंतजार करती थी। लोहिया की मृत्यु तक वह दिल्ली में ही रही घर वापिस नहीं आई। ऐसे कितने ही गरीबों को लोहिया के अस्पताल से वापिस आने का इंतज़ार था कि लोहिया स्वस्थ होकर वापिस आयेंगे और फिर संसद और संसद के बाहर गरीबों की आवाज उठायेंगे। यह दुर्भाग्य ही था कि उन सभी की आशा पूरी नहीं हुई। लोहिया जीवन और मौत से संघर्ष कर रहे थे। अर्ध बेहोशी की हालात में भी जब वे बोलते थे तो पूछते थे कि उ.प्र. के किसान आन्दोलन का क्या हुआ? किसानों की माँगों का क्या हुआ? ऐसा किसानों का हमदर्द कौन हो सकता है? वह हर विषमता के खिलाफ थे, इसलिये उन्होंने अपना इलाज एक सरकारी अस्पताल में कराया, जहाँ की चिकित्सा बहुत ही सामान्य स्तर की थी।

लोहिया यह जानते थे कि वह जिन बातों को उठा रहे है, वे तत्कालीन समाज से बहुत आगे की है। परन्तु वह यह भी जानते थे कि आज या कल देर सवेरे समाज को इन बातों को स्वीकार करना होगा। आज से 70 वर्ष पहले नर-नारी की समानता की बात को उठाना, भारत के लिये मजबूत बनाने को सावित्री नहीं द्रौपदी चाहिये जिसमें बोलने की क्षमता हो, मुकाबला करने की क्षमता हो, साहस हो, यह लोहिया कह रहे थे। अपने विचारों के प्रति उनका विश्वास इतना गहरा था कि अन्ततः समाज को इन्हें स्वीकार करना ही होगा। इसलिये उन्होंने कहा कि ''लोग मेरी बात सुनेंगे, शायद मेरे मरने के बाद पर सुनेंगे जरूर''। उनके पास धन, मकान, सम्पत्ति नहीं थी, न इनकी उन्हें दरकार थी। उनकी सबसे बड़ी पूँजी तो गरीबों का, दुखियों का उनके प्रति विश्वास था। इसलिये उन्होंने कहा था कि ''मेरे पास कोई पूँजी नहीं है सिवाय इसके कि गरीब मुझे अपना आदमी मानते है''।

लोहिया की बात फिर सही होती दिख रही है, न केवल देश ने बल्कि दुनिया ने लोहिया को पढ़ना, खोजना और समझना शुरू किया है। कांग्रेस भी अब इस बात को महसूस करने लगी है कि लोहिया का विरोध व्यक्ति का विरोध नहीं किसी संस्था का विरोध नहीं बल्कि उन उभरती हुये राजनैतिक विकृतियों का विरोध था जो सम्पूर्ण राजनीति को बिगाड़ती है, और बदलाव के हथियार को मौथरा करती है। यह भी अच्छा संकेत है कि, अब देश व कांग्रेस के लोगों ने लोहिया के आजादी के आन्दोलन को स्वीकारना शुरू किया है। म.प्र. के मुख्यमंत्री जी ने 26 जनवरी 2020 के संदेश में आजादी के आन्दोलन के नायकों में लोहिया का उल्लेख किया है, इसके लिये वे साधुवाद के पात्र है। इतिहास को न मिटाया जा सकता, न दबाया जा सकता बल्कि भविष्य को सुधारने का उपाय बनाया जा सकता है।

शहीद दिवस पर विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर, गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता

यूथ आइकन शहीद-ए-आज़म भगत सिंह

भगत सिंह यूथ आइकन है वे भारत ही नहीं पाकिस्तान के युवाओं के भी दिलों में भी बसते हैं। भारतीय स्वाधीनता संग्राम में भगत सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका है,महज 23 वर्षों की अपनी जिंदगी में वे क्रांतिकारी आंदोलन के मुख्य सिद्धांतकार बनकर उभरे हैं। भारत युवाओं का देश है और वे युवाओं के आइकन हैं तो उन पर फिल्में बनना भी लाज़मी हैं। हर दौर में उन पर फिल्में बनी है,साहित्य लिखा गया है और उनके लेखन का दस्तावेजीकरण भी किया गया है ताकि भगत सिंह के जज़्बे और देश के प्रति निष्ठा से युवाओं को परिचित करवाया जा सके। यूथ जनरेशन और युवाओं में इतिहास की समझ को लेकर भी विमर्श की आवश्यकता है। युवाओं में इतिहास की समझ क्यों आवश्यक है इसके लिए डॉ. राममोहन लोहिया के कथन को लिया जा सकता है। उनके अनुसार 'इतिहास हमारे जीवन का अभिन्न आयाम है जिससे पलायन नहीं कर सकते। यह हमें वर्तमान और भविष्य में जीवन जीने का मार्ग बतलाता है'। अभी हाल ही में कई ऐतिहासिक फिल्में आई है जिनसे प्रभावित युवा वर्ग को हिंसा और हिंसक प्रदर्शनों में हिस्सा लेते हम सभी देख रहे हैं। क्या यह वही युवा वर्ग है जो शहीद भगत सिंह को अपना आइकन मानता है। शहीद भगत सिंह ने फांसी पर चढ़ने से कुछ समय पहले कहा था 'जब गतिरोध की स्थिति लोगों को अपने शिकंजे में जकड़ लेती है तो किसी भी प्रकार की तब्दीली से वे हिचकिचाते हैं। इस जड़ता और निष्क्रियता को तोड़ने के लिए एक क्रांतिकारी स्पिरिट पैदा करने की जरूरत होती है, अन्यथा पतन और बर्बादी का वातावरण छा जाता है। लोगों को गुमराह करने वाली प्रतिक्रियावादी शक्तियां जनता को गलत रास्ते पर ले जाने में सफल हो जाती हैं। इससे इंसान की प्रगति रुक जाती है और उसमें गतिरोध आ जाता है। इस परिस्थिति को बदलने के लिए यह जरूरी है कि क्रांति की स्पिरिट ताजा की जाए,ताकि इंसानियत की रूह में एक हरकत पैदा हो'। क्रांति के संबंध में उनका स्पष्ट मत था कि 'क्रांति जो जनता के लिए हो और जिसे जनता पूरा करे' तथा 'क्रांति का इस सदी में एक ही मतलब हो सकता है - जनता के लिए जनता द्वारा राजनीतिक सत्ता पर कब्जा'। अपने क्रांतिकारी कार्यक्रम के मसौदे में उन्होंने लिखा था कि 'साम्राज्यवादियों को गद्दी से उतारने का भारत के पास एकमात्र हथियार श्रमिक क्रांति है और कोई चीज़ इस उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकती है'। भगत सिंह के क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ने के पूर्व क्रांति का मतलब प्रमुखतया पिस्तौल, बम, हत्या,षड्यंत्र और अंततः कुर्बानी ही था। भगत सिंह और उनके क्रांतिकारी साथियों ने दो महत्वपूर्ण संगठनों 'नौजवान भारत सभा' और 'हिंदुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक एसोसिएशन' का गठन किया जिसने क्रांति की पूर्व स्थापित समझ में दो परिवर्तन किए। पहले परिवर्तन के तहत हिंसक कार्यवाही जारी रखी तथा क्रांतिकारियों की नयी पीढ़ी ने उसके बुनियादी नारों को और अधिक सेकुलर और जनोन्मुखी बनाया। 'वंदे मातरम' की जगह 'इंक़लाब जिंदाबाद' और 'डाउन विद इम्पीरयलिज्म' जैसे नारों ने ले ली। दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन था इन संगठनों से किसानों,मजदूरों और छात्रों को जोड़ने का प्रयास करना। नौजवान भारत सभा का एजेंडा राजनीति के साथ साथ सामाजिक भी था। वह पूरे भारत में किसानों और मेहनतकशों का पूरी तरह से स्वतंत्र गणराज्य स्थापित करना चाहती थी। इसके लिए सभा ने किसानों और मजदूरों को लामबंद करने के कार्यक्रम भी दिए। इसके अतिरिक्त सभा का उद्देश्य जीवन में सादगीपूर्ण आदर्शों का समावेश,नियमित व्यायाम,भाईचारे की भावना का विकास तथा स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार प्रसार करना था। सभा का दृष्टिकोण सेकुलर था। वह किसी भी क़िस्म की धार्मिक गोलबंदी को अच्छी नहीं नहीं मानती थी। जब गर्मदली राष्ट्रवाद के प्रमुख नेता लाला लाजपतराय ने हिंदू महासभा के साथ समझौता किया तो नौजवान भारत सभा ने लाला जी की कड़ी आलोचना की थी। 1922 में गोरखपुर के चौरी चौरा की हिंसा के बाद गांधी जी के असहयोग आंदोलन को वापस लेने के निर्णय ने कई आदर्शवादी और देशप्रेमी युवाओं को आहत कर दिया था जो ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ कुछ कर गुजरने के लिए बेकरार थे। असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाले कई युवकों ने क्रांतिकारी राष्ट्रवाद का मार्ग चुन लिया था। चंद्रशेखर आज़ाद,भगत सिंह, सुखदेव,यशपाल,भगवती चरण वोहरा,शिव वर्मा,जतिन दास, मन्मथनाथ गुप्त चौरी चौरा के बाद असहयोग आंदोलन के असहयोगी या कहें सत्याग्रही नहीं रहे थे। भगत सिंह के राष्ट्रवादी विचारों,गतिविधियों तथा शहादत ने उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन की समानांतर धारा के रूप में एक विशिष्ट पहचान दिलाई जो आज भी कायम है। भगत सिंह ने क्रांति को स्पष्ट करते हुए कहा था कि 'क्रांति का मतलब बम और पिस्तौल न होकर सामाजिक रूपांतरण है जिसका अंतिम लक्ष्य मजदूर वर्ग का शासन ही हो सकता है'। भगत सिंह ने सारी दुनिया के क्रांतिकारी आंदोलनों का अध्ययन किया था। सोवियत अनुभव के आधार पर वे दो नतीजों पर पहुंचे थे। पहला भारत की मुक्ति साम्राज्यवाद से मुक्ति के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है और दूसरा केवल अंग्रेजों को भगाना ही काफ़ी नहीं है बल्कि आवश्यकता एक समाजवादी एजेंडे की है। इसी के साथ उन्होंने भारत के क्रांतिकारी आंदोलनों के अनुभवों का गहराई से विश्लेषण किया। लोगों और समय की आवश्यकताओं को समझने का प्रयास किया। इसी क्रम में वे 'रोमांटिक विचारवादी क्रांतिकारी' से 'वैज्ञानिक क्रांतिकारी' में परिवर्तित हुए। भगत सिंह हिंदी, पंजाबी और अंग्रेजी भाषा में लिखते थे। उनकी रचनाओं के शीर्षक ही उनकी विचारधारा और बौद्धिक दृष्टिकोण को रेखांकित करते थे। जिनमें से महत्वपूर्ण 'द आइडियल ऑफ सोशलिज्म' हिस्ट्री ऑफ रेवोल्यूशनरी मूवमेंट्स इन इंडिया,एट द डोर ऑफ डेथ,रिलीजन एंड अवर फ्रीडम स्ट्रगल,कम्युनलिज्म एंड इटस सोल्यूशन, प्रॉब्लम ऑफ अनटचेबिलिटी,विश्व प्रेम,व्हाई आई एम एन.एथीस्ट। सांडर्स हत्याकांड और अप्रैल 1929 को सेंट्रल लेजिस्लेटिव एसेंबली में जिस समय ट्रेड डिस्प्यूट बिल पर चर्चा हो रही थी,भगत सिंह और उनके साथी बटुकेश्वर दत्त ने दर्शक दीर्घा से नीचे हाल में दो क्षतिरहित बम फेंके जिनसे जबरदस्त धमाके की आवाजें हुई। दोनों युवक 'इंकलाब जिंदाबाद' और 'डाउन विद इम्पीरियलिज्म' के नारे लगाते रहे। साथ ही दोनों ने पर्चे भी फेंके जिसमें फ्रांसीसी क्रांतिकारी वेला का फिकरा 'बहरों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है' दर्ज था। एसेंबली बम केस में भगत सिंह को उम्र कैद की सजा हुई और सांडर्स हत्याकांड व लाहौर षडयंत्र केस के तहत उन्हें राजगुरु और सुखदेव के साथ फांसी की सजा सुनाई गई। भगत सिंह चाहते तो आसानी से फरार हो सकते थे लेकिन उन्होंने अदालत के कठघरे से बयान दिया कि भारतवासियों को क्यों पूर्ण स्वतंत्रता और समाजवाद की आवश्यकता है। भगत सिंह ऐसे अनोखे क्रांतिकारी है जिन्होंने खुद अपनी शहादत को पूरी जिम्मेदारी के साथ चुना था। भगत सिंह और उनके साथियों ने राजनीतिक कैदियों का दर्जा पाने के लिए 64 दिनों की भूख हड़ताल की जिसमें यतींद्र दास ने 64 दिनों के अनशन के बाद अपने प्राण त्याग दिए। 23 मार्च 1931 के दिन भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव सिंह को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। जिससे पूरे देश में रोष व्याप्त हो गया। भगत सिंह की लोकप्रियता भारत में गांधी से कम नहीं थी और आज भी वे युवाओं के नायक हैं और रहेंगे। हिंसा और अहिंसा के प्रश्न पर भगतसिंह ने कहा था कि 'किसी विशेष हालत में हिंसा जायज हो सकती है, लेकिन जन-आंदोलनों का मुख्य हथियार अहिंसा होगी'। गांधी और भगत सिंह का साध्य एक था,देश की आज़ादी, लेकिन साधन अलग अलग थे,गांधी अहिंसक साधनों का इस्तेमाल अपने साध्य की प्राप्ति के लिए कर रहे थे तो वहीं भगत सिंह हिंसक साधनों का प्रयोग बहरों को सुनाने के लिए धमाके कर कर रहे थे। भिन्नता के बाद भी समानता की अवधारणा,साम्प्रदायिक सौहार्द,भाईचारे की भावना, अंतिम व्यक्ति के लिए संघर्ष,जाति, धर्म,नस्ल,रंग के आधार पर भेदभाव का अंत गांधी और भगत सिंह के समाजवादी दर्शन में समान रूप से देखे जा सकते हैं। साम्प्रदायिकता और धार्मिक कट्टरता और जुनून को भगत सिंह ने इस प्रकार व्याख्यायित किया था 'सांप्रदायिक वहम और पूर्वाग्रह हमारी प्रगति के रास्ते में बड़ी रुकावट हैं। हमें इन्हें दूर फेंक देना चाहिए यह जानते हुए कि हमारा वास्तविक संघर्ष हमारी कमजोरियों के खिलाफ है,जिसका लाभ दुश्मन भी उठाता है और हम में से कुछ स्वार्थी लोग भी'। भगत सिंह फांसी पर चढ़ने से पहले तक पढ़ रहे थे उन्होंने देश विदेश की सभी क्रांतियों का गहन और सूक्ष्म अध्ययन किया था। अध्ययन के आधार पर ही उन्होंने भारत के लिए नीतियों का निर्माण किया था। आज के युवाओं से भी यही उम्मीद की जाती है कि वे भी गहन व सूक्ष्म अध्ययन करें ताकि उन्हें कोई बरगला न सके और वे अंधविश्वास,साम्प्रदायिक वहम और पूर्वाग्रहों से मुक्त हो जीवनयापन कर सकें। वर्तमान समय की परिस्थितियों को बदलने के लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि 'भगतसिंह की क्रांति की स्पिरिट को ताजा किया जाए,ताकि इंसानियत की रूह में एक हरकत पैदा हो'।

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

हर पहलू में बेशुमार भरी हुई हैं नादानियां

विलक्षण किस्म के,कुछ हटकर अजीब-से स्कूल दिखाना करण जौहर का पसन्दीदा शगल रहा है । सत्ताईस साल पहले करण लाये थे - 'कुछ कुछ होता है' की वो अल्ट्रामार्डन स्कूल । एक ऐसी स्कूल जहाँ टीचर्स मेम और स्टूडेंट्स माइक्रो मिनी स्कर्ट्स में स्कूल में आती है और -'प्यार क्या है ?' जैसे विषय पर विमर्श होता था । वही करण जौहर अब एक ऐसे अज़ीब स्कूल की कहानी लेकर आए हैं, जहां स्टूडेंट डिबेट टीम के कैप्टन का चुनाव उसकी तर्क क्षमता की बजाय एब्स देखकर किया जाता है। जी हाँ , यह स्कूल है फिल्म -'नादानियां' का । यह इस फिल्म की बेशुमार नादानियों में से एक है । यह तो फिल्म के परिदृष्य की बात है इसप्रकार की नादानियां अन्य क्षेत्रों में भी हैं ।

फिल्म 'नादानियां' के पहले अपराधी इसे लिखने वाले हैं। उन्होंने एक ऐसी कहानी लिखी हैं जैसा आमतौर पर नहीं घट रहा है और यह लेखकीय नादानी भारी पड़ रही है। फिल्म की पटकथा नितान्त छिछली है और इब्राहिम खान के लिये गढ़ा गया चरित्र भी घटिया है। अपनी पहली ही फिल्म में निर्देशक शौना गौतम ने अपनी नादानियों के चलते इब्राहिम खान की पहली ही फिल्म में उनका कैरियर दाव पर लगा दिया है ।

निर्देशन के क्षेत्र में अभी-अभी कदम रखने वाली शौना गौतम और फिल्म के लेखक रीवा राजदान कपूर, जेहान हांडा, इशिता मोइत्रा चाहते तो थे एक अमेरिकन टीनएज रॉमाण्टिक-कॉमेडी फिल्म बनाना लेकिन थोड़ा सा हॉलीवुड टाईप हाईस्कूल रोमांस, थोड़ा सा करण जौहर की 'कुछ कुछ होता है', तो थोड़ी अनन्या पांडे वाली 'कॉल मी बे' के टुकड़े जोड़कर बनी ये कहानी कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा जोड़कर भानुमती का कुनबा बन गई

जिसमें नया कुछ भी नहीं है। यहाँ तक कि मिस से मिसेज और टीचर से प्रिंसिपल हो चुकीं' कुछ कुछ होता है 'वाली ब्रिगैंजा मैडम (अर्चना पूरण सिंह)भी कुछ नया

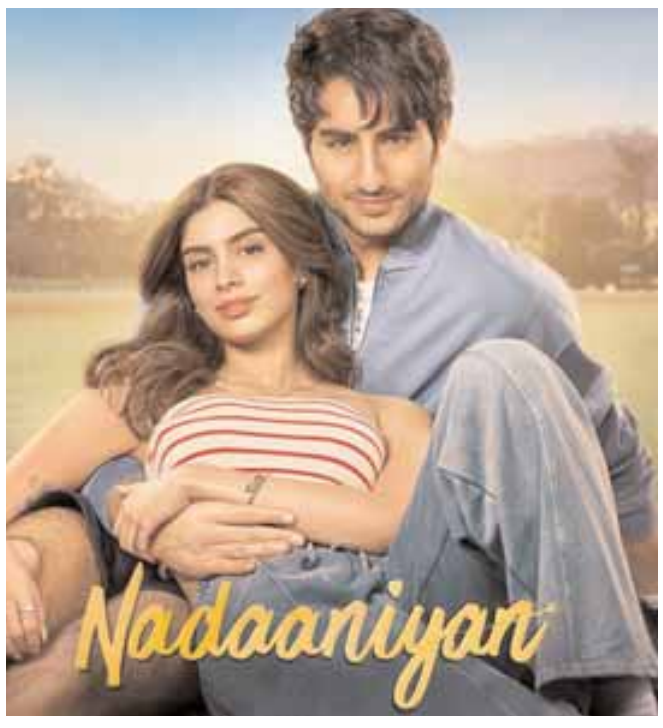

नहीं दे पाई । फिल्म में थोड़ी बहुत राहत के लिए अर्जुन और पिया के पैरेंट्स का ट्रैक है। वरना कोरियन ड्रामा वाले इस दौर में अर्जुन-पिया के मिलने, बिछड़ने और फिर मिलने वाली इस कहानी में कोई दम नहीं लगता। इसकी एक बड़ी वजह इसके लीड कलाकारों खुशी कपूर और इब्राहिम अली खान के बीच केमिस्ट्री का अभाव होनाऔर उनकी कमजोर एक्टिंग भी है।

कहानी दिल्ली के एक अल्ट्रा एलिट स्कूल में पढ़ने वाली पिया जय सिंह (खुशी कपूर) की है। पैसों के मामलों में नव धनाढ्य पिया रिश्तों के मामले में अमीर नहीं है । बड़े होते हुए उसने माँ नीलू (महिमा चौधरी) और पिता रजत (सुनील शेट्टी) के बीच मनमुटाव और दूरियाँ देखीं, वहीं परिवार की बेटे को ही वारिस समझने वाली छोटी और पितृसत्तात्मक सोच का भी शिकार रही। ऐसे में, जब उसकी बचपन की सहेलियाँ भी एक गलतफहमी के कारण उससे खफा हो गईं तो उन्हें मनाने के लिए पिया ने अपना एक नकली बॉयफ्रेंड होने का स्वांग रच दिया, ताकि अपने दोस्तों को यकीन दिला सके कि उसका अपनी ही बीएफएफ के क्रश के साथ कोई चक्कर नहीं चल रहा है। की मोड़ के बाद भी फिल्म की कहानी कोई ऐसी शक्ल अख्तियार नहीं कर पाती है जो दर्शकों के गले उतर सके ।

खुशी कपूर की यह तीसरी फिल्म है, लेकिन उनके अभिनय में आत्मविश्वास अब भी नहीं आया है। उन्हें बहुत मेहनत करने की जरूरत है। वहीं, इस फिल्म से अपना कैरियर शुरु करने वाले इब्राहिम अली खान ज़रुर स्क्रीन पर आकर्षक दिखे हैं, उनकी स्क्रीन प्रेजेंस अच्छी है, मगर उन्हें भी एक्सप्रेशन और डायलॉग डिलिवरी पर काम करना होगा। दिया मिर्जा, जुगल हंसराज, सुनील शेट्टी और महिमा चौधरी जैसे सीनियर एक्टर्स ने इन नए कलाकारों को अच्छा सपोर्ट दिया है। इन चारों की एक्टिंग सधी हुई है।, फिल्म का गाना 'तेरे इश्क में' खूबसूरत बन पड़ा है। फिल्म की एक अच्छी बात ये है कि यह जल्दी खत्म हो जाती है।

एक ही परिवार के तीन सदस्य बने अधिवक्ता

बैतूल। अधिवक्ताओं के रजिस्ट्रेशन के लिए होने वाली ऑल इंडिया बार कौंसिल के एग्जामिनेशन के परिणाम हाल ही में घोषित हुए हैं, जिसमें एक ही परिवार के तीन सदस्य सफल हुए हैं। इस परीक्षा में हिमांशु सरियाम, विक्रम सिंह उइके और प्रिया उइके को सफलता मिली है। विक्रम सिंह उइके सेवानिवृत्त अधीक्षिका श्रीमती लक्ष्मी उइके के पुत्र हैं और इनके भाई पुष्पराज सिंह उइके और बहू श्रीमती रूपाली राज उइके प्रथम श्रेणी मजिस्ट्रेट हैं। सेवानिवृत्त पुलिसकर्मी राजेंद्र उइके और शिक्षिका श्रीमती पुष्पा उइके की सुपुत्री प्रिया उइके है, इसके अलावा शिक्षक मुकेश सरियाम और शिक्षिका श्रीमती रेखा सरियाम के पुत्र हिमांशु सरियाम ने इस कठिन परीक्षा को पास कर अधिवक्ता रजिस्ट्रेशन प्राप्त करने में सफलता हासिल की है। इस एग्जाम को पास करने वाले ये तीनों सदस्य देश की किसी भी अदालत में प्रैक्टिस कर सकते हैं। तीनों की सफलता पर परिजनों, शुभचिंतकों और स्वजातीय बंधुओं ने बधाई प्रेषित की है।

ग्राम तरोड़ा में ससुर और जमाई की एक साथ संदिग्ध मौत

जहरीली शराब से मौत की आशंका

बैतूल/मुलताई। थाना क्षेत्र मुलताई के ग्राम तरोड़ा बुजुर्ग में ससुर और जवाई दोनों की संदिग्ध अवस्था में मौत हो गई प्राप्त जानकारी के अनुसार शुक्रवार की रात को ससुर और जमाई दोनों साथ में शराब पीने गांव में गए थे। शराब पीकर जब वह वापस आए तो 10 मिनट बात करने के बाद दोनों बेहोश हो गए। परिजन उन्हें तुरंत ही मुलताई के एक प्राइवेट अस्पताल में ले गए।जहां से उन्हें मुलताई के सरकारी अस्पताल में रेफर किया गया जहां पर डॉक्टरों

ने अस्पताल में दोनों को मृत घोषित कर दिया गया । इधर सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई है वहीं परिजनों से पूछताछ कर रही है। मृतक की पत्नी बिंदु बेले का कहना है कि दोनों शराब पीने गए थे और वहां से आने के बाद बेहोश हो गए। डॉक्टर पंचम सिंह ने बताया कि तरोड़ा बुजुर्ग निवासी मानकराम पिता साहेबराव बेले 54 और बलराम पिता आनंदराव बगाहे जवाई 40 साल दोनों साथ में गांव में ही कच्ची शराब पीने गए थे। कच्ची शराब पीकर आने के बाद वे घर गया। मृतक मानकराम की पत्नी बिंदु बेले ने बताया कि उनके पति गांव में गए थे और घर आकर उन्होंने बातचीत की, लेकिन अचानक वह बेहोश हो गए। इसके बाद दोनों को निजी वाहन से उन्होंने मुलताई की एक निजी अस्पताल लाया, जहां हालत खराब होने के बाद उन्हें मुलताई के सरकारी अस्पताल भेजा गया था। सरकारी अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया है। इधर थाना प्रभारी देवकरण डेहरिया कहना है कि फिलहाल मर्ग कायम किया गया है और जांच की जा रही है पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद कुछ कहा जा सकेगा।

डॉक्टर ने कहा- पीएम में नहीं मिली संदिग्ध चीज- दोनों शवों का पोस्टमार्टम करने वाले बीएमओ डॉक्टर पंचम सिंह ने बताया है कि पीएम के दौरान कोई भी संदिग्ध चीज नहीं मिली है। दोनों शवों के बिसरा को जांच के लिए भिजवाया गया है। शराब जहरीली हो सकती है या फिर किसी का रिएक्शन हो सकता है। कल (रविवार) शाम तक पीएम रिपोर्ट तैयार कर देंगे। वही फोरेंसिक बिसरा की जांच आने पर स्थिति स्पष्ट हो पाएगी।

पुलिस ने कहा- मृतक के घर से एक्सपायरी डेट की शराब बरामद- पुलिस की थ्योरी जो बात सामने आई है, उसमें दावा किया जा रहा है कि ससुर भगत मानक और दामाद बलराम बगाहे की मौत जहरीले शराब से नहीं हुई है। बोरदही थाना प्रभारी राधेश्याम बट्टी ने बताया कि गांव में शराब बेचने वाले बद्री के यहां जांच की गई। तेल की केन में वहां पर 1 लीटर शराब मिली थी, जिसे जांच के नमूने के तौर पर जब्त किया गया है। उन्होंने बताया कि बद्री के यहां से कल 10 और अन्य लोगों ने शराब पी थी। ये सभी 10 लोगों के घर जाकर देखा गया, तो सभी 10 लोग स्वस्थ थे।

मातृछाया बैतूल पहुंचे पूर्व डीजीपी महेंद्र शुक्ला

सेवा भारती के कार्यों की सराहना की

बैतूल। बैतूल के मातृ छाया में 21 मार्च को समाजसेवी एवं पूर्व डीजीपी महेंद्र शुक्ला और उनकी धर्मपत्नी आशा शुक्ला का आगमन हुआ। इस अवसर पर उन्होंने मातृ छाया में निवासरत शिशुओं और यशोदाओं से आत्मीय बातचीत की। बच्चों के साथ भजन और आरती में भाग लिया और उनके संग बिताए पलों को अत्यंत आनंददायक बताया। इस मौके पर सेवा भारती बैतूल के अध्यक्ष मुकेश खंडेलवाल, सचिव दिपेश मेहता, मातृ छाया के सदस्य सरबजीत वालिया, पूनम खंडेलवाल, शीला दुबे, आनंद धाम

के अध्यक्ष कश्मीरी लाल बत्रा, कोषाध्यक्ष सचिन आर्य और मातृ छाया के प्रबंधक विवेक शर्मा मौजूद रहे। महेंद्र शुक्ला और आशा शुक्ला ने सेवा भारती के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे पिछले 44 वर्षों से इस संस्था से जुड़े हैं और इसके माध्यम से समाज सेवा कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सेवा भारती व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक हर वर्ग और श्रेणी के लिए कार्य करती है। ऐसे कार्यों को देखकर ईश्वर को पाने जैसी अनुभूति होती है और मातृ छाया जैसी सेवा बैतूल सेवा भारती कर रही है, जो वास्तव में एक दिव्य कार्य है। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए कार्यकर्ताओं को प्रेरित किया और सेवा भारती की टीम को जोश से भर दिया। उनके आगमन से कार्यकर्ताओं में ऊर्जा का संचार हुआ और यह आशा जताई गई कि ऐसे प्रेरक व्यक्तित्व समय-समय पर आते रहेंगे, जिससे समाज सेवा के कार्यों में और अधिक नवाचार और प्रगति होगी। सेवा भारती परिवार ने महेंद्र शुक्ला और आशा शुक्ला के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया और उनके आगमन को सौभाग्य बताया।

मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार, अपराधियों को पनाह दे रही सरकार : विभा पटेल

भोपाल। प्रदेश के सतना जिले में ढाई साल की मासूम बच्ची के साथ हुई दरिंदगी, सहित प्रदेश भर में महिलाओं, युवतियों, नाबालिगों के साथ प्रदेश में लगातार हो रही बढ़ रही बलात्कार की घटनाओं पर कड़ी आपत्ति जताते हुये मप्र महिला कांग्रेस की अध्यक्ष श्रीमती विभा पटेल के नेतृत्व में आज प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय के समीप महिला कांग्रेस नेत्रियों द्वारा महिलाओं-बच्चियों की सुरक्षा में नाकाम प्रदेश की नाकारा सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर महिला उत्पीड़न को लेकर विरोध दर्ज किया गया। प्रदर्शन में बड़ी संख्या में शामिल हुई महिला कांग्रेस नेत्रियों ने महिला विरोधी सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुये मोहन यादव सरकार को नींद से जगाने का प्रयास किया।

श्रीमती विभा पटेल ने कहा कि प्रदेश में महिलाओं, युवतियों और अबोध-मासूम बच्चियों के साथ शोषण, दुष्कर्म की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। प्रदेश में दिल दहलाने वाली रोज बलात्कार की लगभग 20 अमानवीय घटनाएं सामने आ रही है, जो इंसानियत को शर्मसार कर रही हैं। प्रदेश की लचर कानून व्यवस्था के चलते आपराधिक सोच के व्यक्तियों के हौसले इतने बुलंद हैं कि वे बेखौफ और निड़र होकर घटनाओं को अंजाम देने से नहीं चूक रहे है।

श्रीमती पटेल ने कहा कि सतना में घटित हुई घटना से साबित होता है कि प्रशासन बहन-बेटियों को सुरक्षा देने में पूरी तरह नाकाम है। प्रदेश में महिलाएं और बच्चियां सुरक्षित नहीं हैं। बढ़ते महिला अपराधों से सभ्य समाज कलंकित हो रहा है। इन घटनाओं से महिलाओं, बच्चियों में भय और

आमजन में आक्रोश व्याप्त है।

श्रीमती पटेल ने कहा कि प्रदेश के मुखिया मोहन यादव जो स्वयं गृहमंत्री का दायित्व संभाल रहे हैं, उनसे न तो मुखिया की कुर्सी संभल रही है और न ही गृहमंत्री का दायित्व ठीक से संभाल पा रहे हैं। उन्होंने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि गृहमंत्री का दायित्व किसी अच्छे, योग्य और जिम्मेदार व्यक्ति को सौंप दें, ताकि प्रदेश की कानून-व्यवस्था को चौक-चौबंद किया जा सके, अपराधियों पर लगाम लगे, ताकि प्रदेश में महिलाओं, बच्चियों को सुरक्षा और सम्मान मिल सके, आमजन को आपराधिक प्रवृत्ति के असामाजिक तत्वों से राहत मिल सके।

श्रीमती पटेल सहित महिला नेत्रियों ने प्रदेश में बढ़ते महिला उत्पीड़न मामलो पर रोक लगाये जाने की मांग को लेकर किये गये प्रदर्शन के दौरान राज्यपाल महोदय के नाम संबोधित ज्ञापन स्थानीय थाना प्रभारी को सौंपते हुये प्रदेश में हर दिन नाबालिग बच्चियों, महिलाओं के साथ घटित हो रही घटनाओं, बढ़ती बलात्कार और दुष्कर्म की घटनाओं पर रोक लगाने की मांग की। प्रदर्शन में जिला शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष प्रवीण सक्सेना, महिला कांग्रेस नेत्रियां राजलक्ष्मी नायक, शीतल मालवीय, तला देवरे, अंबिका शर्मा, यशोदा पांडेय, रासिदा मुस्तफा, चंदा चौहान, रेखा भदौरिया, राजकुमारी केवट, पार्वती मोरे, सकुन राणा, रजनी दुबे सहित अन्य महिला कांग्रेस नेत्रियां उपस्थित थीं।

इलेक्ट्रम इंस्टीट्यूट ने मरणोपरांत स्वतंत्रता संग्राम पं. पूरनप्रसाद को किया सम्मानित

बैतूल। शहर के गुरुद्वारा रोड पर कृष्णा कॉम्प्लेक्स में स्थित प्रसिद्ध कोचिंग क्लास इलेक्ट्रम इंस्टिट्यूट बैतूल द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में सक्रिय समाजसेवी अनिरूद्ध मिश्रा (गुरुजी) के दादाजी स्वतंत्रता संग्राम पंडित पूरनप्रसाद मिश्र को मरणोपरांत राष्ट्रवीर सम्मान से सम्मानित किया है। दरअसल पंडित पूरनप्रसाद मिश्र द्वारा सन् 1857 में अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध उठे विद्रोह में मंगल पांडे के नेतृत्व में कान्यकुब्ज बटालियन के सैनिक के रूप में विद्रोही सैनिक की जबरदस्त भूमिका निभाई थी, जब यह विद्रोह असफल हो गया और अंग्रेजों ने पूरी बटालियन के सैनिकों को मृत्युदंड देने का फरमान जारी किया था, तो

तब सभी विद्रोही सैनिको ने भूमिगत होने का निश्चय किया। तब पं. पूरण प्रसाद मिश्र बैतूल जिले के साईंखेड़ा ग्राम के निवासी भवानी प्रसाद देवीप्रसाद उपाध्याय के घर उनके संरक्षण में रहें। पंडित पूरण प्रसाद मिश्र के प्रपोत्र पंडित मनोहरलाल मिश्र, जिनका जन्म 15 जनवरी 1906 को हुआ, मनोहर लाल मिश्र ने भारत के स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्हे सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अध्यक्ष भी नियुक्त किया गया था। वे देश की स्वतंत्रता के बाद भी बैतूल जिले एवं भारतवर्ष के लिए परस्पर जनसेवा का कार्य करते रहें एवं भारत सरकार द्वारा प्राप्त ताम्रपत्र को उन्होंने वापस कर सदैव राष्ट्र सेवा में अपने आप को समर्पित किया और 18 दिसंबर 1998 को पंडित जी हम सभी भारतवासियों की स्मृति में सदा के लिए अमर हो गये। यहां उल्लेखनीय है कि बैतूल की प्रसिद्ध संस्था इलेक्ट्रम इंस्टिट्यूट द्वारा समय-समय पर राष्ट्र सेवा के लिए अपना सर्वत्र निछावर करने वाले वीरों को राष्ट्रवीर सम्मान से सम्मानित किया जाता है।

युवाओं को रोजगार दिलाने जिले में स्थापित किए जायेंगे बड़े उद्योग : खण्डेलवाल

बैतूल विधायक ने 63 लाख के विकास कार्यो का किया भूमिपूजन

बैतूल। केंद्र सरकार और मध्यप्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से समाज का हर वर्ग लाभान्वित हो रहा है। अब गांव से लेकर नगरों तक हर क्षेत्र मे तरक्की नजर आ रही है। बैतूल जिले में मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता के बाद मेरी प्राथमिकता अब युवाओं को रोजगार दिलवाने की है। बैतूल जिले में बिजली, पानी और आवागमन की सुलभता एवं शांतिपूर्ण माहौल से यहां औद्योगीकरण की अपार संभावनाएं है। मेरा प्रयास है कि जिले में बड़े उद्योग स्थापित करवाए जाए। जिससे युवाओं को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार मिले। युवाओं के स्किल डेवलपमेंट के लिए भारत सरकार के सहयोग से स्किल डेवलपमेंट ट्रेनिंग सेंटर खुलवाने के प्रयास भी किए जा रहे है। विधायक हेमंत खंडेलवाल ने उक्त बातें बैतूल विधानसभा के ग्रामीण इलाकों में विकास कार्यो के भूमिपूजन कार्यक्रमो में ग्रामीणों के साथ संवाद के दौरान कही। विधायक श्री खंडेलवाल ने 22 मार्च को बैतूलबाजार मण्डल के पांच ग्रामों में मुख्यमंत्री विशेष निधि के तहत 63 लाख रुपये की लागत के आधा दर्जन विकास कार्यो का भूमिपूजन किया।

इन विकास कार्यों का किया भूमिपूजन

बैतूल विधायक श्री खंडेलवाल ने शनिवार को बैतूलबाजार मंडल अंतर्गत पांच ग्रामों में मुख्यमंत्री विशेष निधी के तहत 63 लाख रुपए की लागत के विकास कार्यों का भूमिपूजन किया। बैतूल विधायक ने जावरा ग्राम में 12 लाख रुपए के सामुदायिक भवन, रौंधा में 9 लाख रुपए की 300 मीटर सीसी रोड, खापा मे 15 लाख रुपए लागत के सामुदायिक भवन- बाउंड्रीवॉल, सोहागपुर में 5 लाख रुपए लागत के मोक्षधाम सौंदर्यीकरण तथा मिलानपुर ग्राम में 10 लाख रुपए लागत का मोक्षधाम पहुंच मार्ग व 12 लाख के सामुदायिक भवन का भूमिपूजन किया।

चौक-चौराहों पर लगेंगे संकेतक, बनेगी पार्किंग सहित आरसीसी नालियां

शहर के चौक–चौराहों का होगा चौड़ीकरण और सौंदर्यीकरण

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर के प्रमुख चौक-चौराहों का चौडीकरण और सौंदर्यीकरण होगा, इसके लिए नगरपालिका को मुख्यमंत्री अधोसंरचना विकास योजना के चतुर्थ चरण के तहत नगरी प्रशासन से करोड़ों रुपए का बजट भी मिला है। जिसके तहत करीब 5 करोड़ 92 लाख की लागत से शहर के चौराहों का सौंदर्यीकरण किया जाना है और इसके टेंडर भी हो चुके और काम भी जल्द शुरू हो जाएगा। बता दे कि नगरपालिका ने शहर के कुछ चौक-चौराहों का सौंदर्यीकरण और चौड़ीकरण किए जाने के लिए चयन किया गया है। बताया जा रहा है कि प्रत्येक चौराहों का आकार और डिजाइन अलग-अलग होगा। कोई चौराहा गोलाकार आकृति में बनाया जाएगा तो कोई षष्ठकोण आकार का होगा। इसके अलावा त्रिभुज आकार के चौराहे भी बनाए जाएंगे। चौराहों की ड्राइंग डिजाइन भी पूर्व में अप्रूवल हो चुकी है।

इन चौराहों का होगा सौंदर्यीकरण व विस्तार- नगरपालिका शहर के मुख्य चौक-चौराहों का सौंदर्यीकरण करायेगी। जिसमें गेंदा चौक, कारगिल चौक, शिवाजी चौक, गणेश चौक शामिल हैं। इन चौक-चौराहों पर पार्किंग की व्यवस्था और नाली का निर्माण भी होगा। इसके अलावा मैकेनिक चौक से जायका होटल की तरफ नाली निर्माण तथा गांधी चौक पर पार्किंग निर्माण भी होगा। हालांकि कॉलेज चौक का चौड़ीकरण और सौंदर्यीकरण का प्रस्ताव पहले ही भेजा जा चुका था। इस चौक का सडक़ सुरक्षा मद में सौंदर्यीकरण होना था, लेकिन फंड का ईश्यू आने से परिषद में प्रस्ताव रखा जायेगा। इसके अलावा मैकेनिक चौक, अखाड़ा चौक और थाना कोतवाली चौक का भी भविष्य में सौंदर्यीकरण किया जायेगा।

प्रत्येक चौहारों पर 45 से 50 लाख होंगे खर्च- शहर के प्रमुख चौराहों का सौंदर्यीकरण किया जाना हैं, जिनमें प्रत्येक चौराहों पर 45 से 50 लाख रुपए का खर्चा आना बताया जा रहा है। इसके अलावा नाली निर्माण और पार्किंग के लिए भी खर्चा किया जाना है। इस प्रकार कुल 5 करोड़ 92 लाख सौंदर्यीकरण पर खर्च होगा। नगरपालिका के मुताबिक चौराहों का पूरी तरह से स्वरूप बदला जाएगा। चौराहे पहले से अधिक चौड़े होंगे और आवागमन की सुविधा भी इससे बेहतर हो जाएगी। वर्तमान में चौराहे संकरे होने की वजह से कई बार जाम लग जाता है।

अभी संकरे चौक-चौराहा होने से लगता है जाम- शहर के अधिकांश चौक-चौराहे अभी संकरे है। जहां अक्सर वाहन आमने-सामने खड़े हो जाते है। जिससे वाहन चालकों को बार-बार जाम जैसे हालातों से दो-चार होना पड़ता है। वर्तमान की स्थिति में चौक-चौराहों की चौड़ाई काफी कम है। चौराहे सकरे होने की वजह से आए दिन सड़क पर जाम लगने की स्थिति बनती है। खासकर लक्ष्मी चौक, गंज चौक, अंबेडकर चौक सहित अन्य शामिल है। योजना के तहत सभी सातों चौराहों की चौड़ाई बढ़ाई जाएगी। वर्तमान की अपेक्षा इन्हें और अधिक चौड़ा किया जाएगा ताकि आवागमन बेहतर तरीके से हो सके।

इनका कहना है -

मुख्यमंत्री अधोसंरचना विकास योजना के तहत शहर के चार चौक-चौराहों का चौड़ीकरण और सौंदर्यीकरण होना है। इसके अलावा अन्य चौक के सौंदर्यीकरण का प्रस्ताव पीआईसी की बैठक में रखा जायेगा। वहीं कोठी बाजार के गांधी चौक में पार्किंग भी बनना है तथा संकेतक भी लगाये जायेगे।

- नीरज धुर्वे, एई, नगर पालिका परिषद, बैतूल

सेमरी हरचंद में होली मिलन समारोह

पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी : विजयपाल

सुबह सवेरे सोहागपुर। हम सभी पार्टी के कार्यकर्ता सौभाग्यशाली हैं कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है।कार्यकर्ता बंधु जोश, उत्साह और मेहनत से भारतीय जनता पार्टी का कार्य करता हैं। प्रत्येक कार्यकर्ताओं को पार्टी का काम पूर्ण निष्ठा से करना चाहिए। एक एक कार्यकर्ता की मेहनत से ही पार्टी के विभिन्न कार्य संपन्न होते हैं। प्रत्येक कार्यकर्ता को पार्टी, सरकार और समाज के लिए निरंतर काम करते रहना चाहिए। हमारी पार्टी समस्त विचारधाराओं लेकर चलती हैं। उक्त उद्गार क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने ग्राम सेमरी हरचंद में होली मिलन समारोह में आयोजित कार्यकर्ता सम्मेलन में कहें।

इस अवसर पर अध्यक्षता कर रहे लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा राज्यमंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल , क्षेत्रीय सांसद दर्शन सिंह चौधरी , राज्य सभा सांसद श्रीमती माया नारोलिया , बीजेपी जिला अध्यक्ष श्रीमती प्रीति शुक्ला, पूर्व विधायक श्रीमती सविता दीवान शर्मा , सुरेश पटेल जिला उपाध्यक्ष, जिला महामंत्री किसान मोर्चा निखिलेश चतुर्वेदी आदि मंचासीन थे। इसके पूर्व आपने

आगे कहा कि सोहागपुर विधानसभा क्षेत्र के सभी बूथ एवं मंडल अध्यक्षों एवं कार्यकर्ताओं का स्वागत वंदन एवं अभिनंदन है । आपने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात पर भी सारगर्भित उल्लेख किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने भारत माता, श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के चित्र पर पुष्प माला एवं दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम को अतिथियों ने भी संबोधित किया।होली मिलन समारोह एवं कार्यकर्ता सम्मेलन कार्यक्रम में बूथ एवं मंडल के कार्यकर्ताओं को सम्मानित करके बूथ एवं मंडल के कार्यकर्ताओं के ऊपर पुष्पवर्षा की गई। वहीं वरिष्ठ बुजुर्ग भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को भी शाल श्रीफल एवं पुष्प की माला पहना कर सम्मानित किया गया। आर्कषण का केंद्र रहे बच्चों को भी फूल-मालाएं पहनाकर स्वागत किया गया। इसी अवसर पर क्षेत्रीय विधायक विजयपालसिंह ने लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग राज्यमंत्री माननीय श्री नरेंद्र शिवाजी पटेल जी का साल-श्रीफल एवं माँ नर्मदा का स्मृति चिन्ह प्रदान करके अभिनंदन किया। कार्यक्रम में योगेश मालवीय मंडल अध्यक्ष सेमरीहरचंद, मनीष चतुर्वेदी मंडल अध्यक्ष माखननगर, डालचंद मीना, बाबूलाल अग्रवाल सहित भारी संख्या में बूथ, मंडल कार्यकर्ता जनप्रतिनिधि , गणमान्य नागरिक आदि उपस्थित थे।

छापरी स्कूल को समाजसेवियों ने किये पंखा और वाटर कूलर भेंट, हुआ सम्मान समारोह

देवास। क्षिप्रा संकुल के ग्राम छापरी की एकीकृत शाला में आज एक गरिमामयी कार्यक्रम में ग्राम सरपंच केदार पटेल द्वारा बच्चों की सुविधा के लिए वॉटर कूलर तथा उप सरपंच हरिसिंह दरबार द्वारा पंखा भेंट किया गया । इस अवसर पर एक सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डीपीसी अजय मिश्रा, बीआरसी किशोर वर्मा,शिक्षाविद विजय श्रीवास्तव, तथा एक्ट ईव फाउंडेशन के अध्यक्ष मोहन वर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे,जिनका स्वागत शाला प्रधान अध्यापक राजेश चौहान,ममता सोलंकी,हँसा चौधरी ने किया ।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए हँसा चौधरी ने बताया कि आज स्कूल को समाजसेवियों की सहायता से वाटर कूलर तथा पंखें भेंट किए गए है,हम उनका आभार प्रकट करते है । इसी तरह

सामाजिक संस्था एक्ट ईव फाउंडेशन के अध्यक्ष मोहन वर्मा के माध्यम से स्कूल को बीस सेट फर्नीचर सुकलिया स्कूल को दस सेट फर्नीचर तथा क्षिप्रा उमावि को सेनेटरी पैड मशीन भी भेंट की गई है उसके लिए हम एक्ट ईव फाउंडेशन का भी आभार मानते हैं । कार्यक्रम में अतिथियों और दानदाताओं का सम्मान भी किया गया कार्यक्रम में कन्हैयालाल परमार,सुरेश चंद्र वर्मा, विनीता जैन,शकुंतला मालवीय,गुलाब वर्मा,आलेख वर्मा,राजेश बराना, आशा बढ़गोटिया, हरनामसिंह अचालिया, देवकरण मालवीय, सलाहुद्दीन पठान, कैलाशचंद्र सोनी, रितेश कौशल,जितेंद्र मालवीय, मनीश दीक्षित, विशाल राजौरिया,रमाशंकर सोनी, संजय पालिवाल, प्रवीण आशापुरे उपस्थित थे । आभार राजेश चौहान ने माना । सहभोज के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

इस गाने के बिना हर बार अधूरी है होली

बॉलीवुड के सॉन्ग्स किसी भी फेस्टिवल की रौनक बढ़ा देते हैं। चाहे बर्थडे हो, वेडिंग एनिवर्सरी, दिवाली या होली। अगर बॉलीवुड सॉन्ग न बजे, तो सेलिब्रेशन अधूरा सा लगता है। खासतौर पर होली के मौके पर, जब चारों ओर रंग और मस्ती का माहौल होता है, तब बॉलीवुड के होली सॉन्ग फेस्टिवल का मजा दोगुना कर देते हैं। अगर आप होली के गानों की बात करें तो 'जोगी जी वाह जोगी जी' का जिक्र जरूर होगा। यह गाना 1982 में रिलीज हुई फिल्म 'नदिया के पार' का है, जिसे 15 गायकों ने मिलकर गाया था। यह अपने आप में एक अनोखी बात है। क्योंकि, आमतौर पर गानों में इतने सिंगर की आवाज कम ही सुनाई देती है।

'नदिया के पार' फिल्म अपने शानदार गानों के लिए जानी जाती है और इस फिल्म का होली सॉन्ग आज भी हर साल इस त्योहार पर जरूर बजता है। यह गाना इतना खास इसलिए भी है, क्योंकि इसे मुख्य रूप से हेमलता, जसपाल सिंह, चंद्रानी मुखर्जी और सुशील कुमार ने गाया था। लेकिन, इनके साथ 10 और सिंगर्स ने अपनी आवाज दी थी। कुल मिलाकर 15 सिंगरों की मेहनत से 8 मिनट 14 सेकंड का यह गाना बना था, जो आज भी लोगों की पहली पसंद बना है।

'जोगी जी वाह जोगी जी' गाने में राधा-कृष्ण की होली का जिक्र किया गया, जिससे यह और भी खास बन जाता है। यह गाना सचिन-साधना और दूसरे कलाकारों पर फिल्माया गया था और इसे दर्शकों का जबरदस्त प्यार मिला। खास बात यह है कि इसी फिल्म 'नदिया के पार' का रीमेक बाद में राजश्री प्रोडक्शन ने 'हम आपके हैं कौन' के

रूप में बनाया, जो ब्लॉकबस्टर साबित हुई। जब भी होली का जिक्र होता है, तो 'जोगी जी वाह जोगी जी' गाना आज भी सबसे पहले याद आता है। 42 साल बाद भी यह गाना हर होली पार्टी की जान बना हुआ है और शायद आने वाले सालों तक भी बना रहेगा।

जब होली के दिन सलमान और शाहरुख

शुक्रवार को लोग होली का त्योहार मना रहे थे। इस खास मौके पर आज हर कोई रंग खेलने में जुटा रहा। रंग खेलने के साथ साथ लोग अपने घरों पर लाउड म्यूजिक बजाकर खूब पार्टी कर रहे थे। ऐसे में भला बॉलीवुड कैसे पीछे रह सकता है। बॉलीवुड के सितारे भी होली खेलने के चक्कर में सोशल मीडिया पर एक्टिव हो गए। सितारे अपनी अपनी होली की तस्वीरें फैंस के साथ शेयर कर रहे हैं। इस बीच सलमान खान और शाहरुख खान की एक तस्वीर लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींच रही है। इस तस्वीर में सलमान खान और शाहरुख खान होली खेलते नजर आ रहे।

इस बार तो होली के मौके पर रमजान चल रहे हैं। ऐसे में सलमान और शाहरुख के लिए इस बार होली खेलना थोड़ा सा मुश्किल हो सकता था। लेकिन, एक जमाना था जब दोनों हर पार्टी की शान बन जाया करते थे। इस पुरानी तस्वीर में सलमान खान और शाहरुख खान होली के रंगों में सराबोर नजर आ रहे। जहां सलमान पानी में भीगे दिख रहे, वहीं शाहरुख ने भी खुद को बचाने के लिए सिर पर कपड़ा बांधा हुआ है। सलमान खान और शाहरुख खान को देखकर साफ पता चल रहा है कि उन्होंने अपने दोस्तों के साथ खूब होली खेली है।

जवानी के दिनों की इस तस्वीर को देखकर सलमान और शाहरुख के फैंस भी चौंक गए। फैंस लगातार दोनों की इस तस्वीर की तारीफ कर रहे हैं। फैंस का कहना है कि दोनों को फिर से ऐसे ही होली खेली चाहिए। हाल ही में सलमान खान ने अपनी फिल्म सिकंदर का एक गाना रिलीज किया 'बम बम बोले' नाम के इस गाने में सलमान खान जमकर होली का जश्न मनाते नजर आ रहे हैं। सलमान खान के इस गाने ने लोगों का दिल जीत लिया है।

'डॉन 3' से बाहर हुईं कियारा आडवाणी

एक्ट्रेस कियारा आडवाणी इन दिनों अपनी प्रेग्नेंसी को एंजॉय कर रही हैं। हाल ही में उन्होंने अपना प्रेग्नेंसी अनाउंसमेंट किया। इसे देखकर फैंस की खुशी का ठिकाना नहीं था। कियारा आडवाणी और सिद्धार्थ मल्होत्रा ने मिलकर अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर एक फोटो पोस्ट की और लिखा था 'हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी खुशी!' अब, वहीं कियारा आडवाणी को लेकर एक और बड़ी खबर सामने आ रही। कियारा ने फरहान अख्तर और रणवीर सिंह की 'डॉन 3' छोड़ दी।

कुछ महीने पहले फरहान अख्तर ने 'डॉन 3' का अनाउंसमेंट किया था। इस दौरान उन्होंने यह भी बताया था कि इस फिल्म में

शाहरुख खान नहीं, बल्कि एक्टर रणवीर सिंह नजर आएंगे। वहीं फिल्म में रणवीर के अपोजिट कियारा आडवाणी को कास्ट किया था। हालांकि, अब इस फिल्म में कियारा नजर नहीं आएंगी। दरअसल एक्ट्रेस ने ये मूवी छोड़ दी। कियारा आडवाणी फिलहाल अपनी प्रेग्नेंसी और बेबी पर ध्यान देना चाहती हैं और इस वजह से उन्होंने इस फिल्म से अपनी कन्नी काट ली।

सूत्रों का कहना है कि कियारा आडवाणी अपनी लाइफ के इस फेज को एंजॉय करने के लिए ब्रेक लेना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि फिलहाल वे अपनी आने वाली फिल्म 'टॉक्सिक' और 'वॉर 2' का शेड्यूल खत्म करना चाहती हैं। इसके बाद कियारा परिवार और अपने बच्चे के साथ वक्त बिताने के लिए ब्रेक लेंगी। उनके इस फैसले की मेकर्स भी तारीफ कर रहे हैं। वे अब डॉन 3 के लिए वह नई हीरोइन की तलाश कर रहे हैं। यह भी बताया जा रहा कि कियारा आडवाणी डिलीवरी के कुछ महीनों बाद ही काम पर आएंगी और वह अपनी फिल्म 'शक्ति शालिनी' और 'धूम 4' की शूटिंग करेंगी, जो अगले साल 2026 में फ्लोर पर उतरेगी।

रियल बॉक्स

जब फिल्मों में नहीं थे रंग, तब भी मनी रंगीन होली

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

होली यानी रंगों वाला त्यौहार। ऐसा त्यौहार जिसमें सिर्फ मस्ती का मूड रहता है। दिल से लेकर दिमाग तक में रंग भरे होते हैं। इस त्यौहार ने जीवन के हर पक्ष पर अपना असर दिखाया। क्योंकि, रंग हमारे जीवन के हर पहलु से जुड़ा है और हर रंग कई गहरे अर्थ दर्शाते हैं। हमारे शरीर की आभामंडल में भी कई रंग हैं। अगर हम अपने आंतरिक रंग के प्रभाव और अर्थ को भूल गए हैं, तो अपने हाथों में रंग भरकर होली के दिन हम किसी दूसरे को रंग लगाते हैं। होली के रंग ऊर्जा, जीवंतता, और आनंद के प्रतीक होते हैं। हरा रंग हरियाली खुशहाली का प्रतीक है। जबकि, लाल रंग शक्ति और दृढ़ता दर्शाता है। पीला रंग प्रसन्नता दिखाता है। गुलाबी रंग में प्रेम बसता है। नीले रंग में विशालता बसी है। श्वेत रंग को शांति का प्रतीक माना जाता है। केसरिया संतोष या त्याग का प्रतीक है और बैंगनी रंग ज्ञान से जुड़ा है। यहां तक कि फिल्मों में भी यह त्यौहार सबसे पसंदीदा बन गया। फिल्मी परदे पर दर्शक कई दशकों से त्योहारों का जश्न मनते देखते आ रहे है। फिल्मों में सबसे ज्यादा होली के त्यौहार को मनाया जाता है। लेकिन, इसे आश्चर्य ही माना जाना चाहिए कि अभी तक होली नाम से सिर्फ दो फिल्में आई। एक थी 'होली' और दूसरी 'होली आई रे।' 1967 में 'भक्त प्रहलाद' बनी, जिसमें होली का धार्मिक आधार बताया गया।

कई फिल्मों में होली सीक्वेंस के गाने फिल्माए गए। लेकिन, जब फिल्मों में रंग नहीं भरे थे और ब्लैक एंड व्हाइट फ़िल्में बनती थी, तब भी फिल्मकारों ने होली के सीन फिल्माए। ये जानते हुए कि दर्शकों को परदे पर रंग नहीं दिखेंगे। फिर भी ऐसे दृश्य फिल्माए और उन्हें सराहा गया। साल 1940 में आई फिल्म 'औरत' में सबसे पहले होली सीन दिखाया गया था। यह फ़िल्म ब्लैक ऐंड व्हाइट थी, इसलिए इसमें होली के रंग परदे पर नहीं दिख पाए। फिल्म में एक गाना भी था, जिसके बोल थे 'आज होली खेलेंगे साजन के संग।' गायक अनिल विश्वास ने इस गीत को गाया और वे ही इसके म्यूजिक डायरेक्टर भी वही थे। होली को लेकर आया यह पहला गाना काफी हिट रहा। इस फिल्म को महबूब खान ने बनाया था। इस फिल्म को इसलिए भी याद किया जाता है, कि फिल्मों में होली दृश्य फिल्माने की शुरुआत यहीं से हुई। इसके बाद इसके बाद 1944 में दिलीप कुमार की पहली फिल्म 'ज्वार भाटा' आई। यह भी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म थी, जिसमें भी होली दृश्य फिल्माया गया था।

इसके बाद 50 के दशक में महबूब खान की ही फिल्म 'आन' आई। इसमें दिलीप कुमार और निम्मी की जोड़ी थी। इनके साथ नादिरा ने भी 'आन' में अहम किरदार निभाया था। इस फिल्म ने होली के सीन में रंग भरा था। 'आन' में होली का गाना था 'खेलो रंग हमारे संग।' इस गाने में दिलीप कुमार और निम्मी ने रंगों के त्योहार को दिखाने के लिए ऐसी शानदार अदाकारी की। ये पहली बार था जब परदे पर होली के दृश्य रंगीन दिखाए गए। 'आन' का गाना भी लंबे समय तक दर्शकों में लोकप्रिय रहा था। नादिरा की ये डेब्यू फिल्म थी। अपनी पहली होली दृश्य वाली फिल्म 'औरत' महबूब खान को इतनी रास आई कि उन्होंने इस कथानक को 17 साल बाद 1957 में फिर बनाया जिसका नाम 'मदर इंडिया' था। यह फिल्म आज भी अपने दमदार कथानक के लिए याद की जाती है और हिंदी की कालजयी फिल्मों में से एक है। 'मदर इंडिया' 1957 में रिलीज हुई थी और ब्लॉकबस्टर साबित हुई। इसके बाद वी शांताराम की फिल्म 'नवरंग' में 'चल जा रे हट नटखट ज' फिल्माया गया। इसके बाद से फिल्मों में होली सीक्वेंस डालने का सिलसिला चला आ रहा है। होली के सीन और गाने फिल्म को हिट कराने की गारंटी माने जाने लगे। लगने लगा मानो, सिनेमा और होली के बीच चोली-दामन का साथ हो। फिल्मों में होली दृश्य की अहमियत होती है, पर कई बार फिल्म

से ज्यादा वैसे फिल्मों की होली और उससे जुड़े गाने हमेशा से ट्रेंड में रहे। लेकिन, 50 के दशक तक फिल्मी दुनिया रंगीन हो चुकी थी। इस वजह से होली जैसे त्योहारों की चमक सिल्वर स्क्रीन पर भी अलग ही रंगत से नजर आने लगी थी। 'आन' के बाद फिल्मी परदे पर होली को फिल्माने का एक चलन-सा शुरू हो गया। कई फिल्मों में रंगों के सीन फिल्माए गए। आज भी कई ऐसी फिल्में हैं, जिन्हें उनके होली दृश्यों की वजह से ही याद किया जाता है। फिल्मों में होली सीन कई बार कहानी में नया मोड़ देने के साथ दर्शकों को यादगार अनुभव भी देते हैं। शोले (1971), सिलसिला (1981), दामिनी (1993), मोहब्बतें (2000), बागबान (2003), गोलियां की रासलीला-राम-लीला (2013) ऐसी ही फ़िल्में हैं। 'मदर इंडिया' का 'होली आई रे कन्हाई' क्लासिक होली गाने के तौर पर याद किया जाता है। इस गाने को होली पार्टियों में आज भी बजाया जाता है।

होली गीतों की एक खासियत यह भी है कि कई गीतों में आंचलिक लोकगीतों की गूंज होती है। होली के धमाल में फिल्मी होली गीतों की रंगत का तो कहना ही क्या! ऐसे गीतों में तन रंग लो पिया जी मन रंग लो, होली आई रे, दिल में होली जल रही है, आओ रे आओ खेलो होली बिरज में, जोगी जी धीरे धीरे, मल के गुलाल मोहे आई होली आई रे, अपने रंग में रंग दे मुझको। हर रंग सच्चा रे सच्चा,लेटस प्ले होली, बलम पिचकारी जो तूने मुझे मारी जैसे कई गीतों की लोकप्रियता बरकरार है। अमिताभ बच्चन और रेखा पर संजीव कुमार के साथ फिल्माया गया फिल्म 'सिलसिला' के होली गीत 'रंग बरसे भीगे चुनर वाली' ने तो लोकप्रियता के तमाम रिकॉर्ड तोड़ दिए थे। फिल्मों ने एक से बढ़कर एक यादगार होली गीत दिए, जो दिलों को स्पंदित करते हैं।

इसके बाद फिल्म 'शोले' के गीत 'होली के दिन' ने भी रिकॉर्ड बनाया, जिसे धर्मेंद्र और हेमा मालिनी पर दिल को छू लेने वाले अंदाज़ में फिल्माया गया था। गीत की मिठास, मोहक नृत्य और रंग-अबीर के भव्य सेट दर्शक आज तक भूल नहीं पाए। फिल्म 'डर' का गीत जिसे शाहरुख खान पर फिल्माया गया 'अंग से अंग लगाना, सजन हमें ऐसे रंग लगाना' भी यादगार होली गीतों में जुड़ गया। ये चुनिंदा होली गीत दर्शकों के दिल की धड़कन बन गए और होली की मस्ती में छा गए। सत्तर और अस्सी के दशक में तो फिल्मों में होली गीतों की अहमियत इतनी बढ़ गई थी, कि लगभग हर साल एक दो फिल्मों में होली गीत होते ही थे।

वी शांताराम की फिल्म नवरंग का 'अरे जा रे हट नटखट ना छू रे मेरा घूंघट' गीत उस दौर का फिल्माया गया बेहतरीन गीत था जो आज भी बुजुर्गों का प्रिय गीत हैं। राजेश खन्ना और आशा पारेख पर फिल्माया गया 'कटी पतंग' का गीत 'आज न छोड़ेंगे बस हमजोली खेलेंगे हम होली' हुड़दंग वाले गीत की श्रेणी में आता है। 'फागुन' फिल्म में धर्मेंद्र और वहीदा रहमान पर फिल्माया गया 'पिया संग होली खेलूं फागुन आयो रे' गीत का सुमधुर संगीत आज भी लोगों को याद है। राजश्री की 'नदिया के पार' में ग्रामीण परिवेश में सचिन और नवोदित अभिनेत्री साधना सिंह पर फिल्माया गया गीत 'जोगी जी धीरे-धीरे' को भी लोग भूले नहीं। इसी दशक में आई फिल्म 'आखिर क्यों' में स्मिता पाटिल, टीना मुनीम और राकेश रोशन पर फिल्माया गया गीत 'सात रंग में खेल रही हैं दिल वालों की टोली रे' और मशाल फिल्म का गीत 'होली आई देखो होली आई रे' भी खूब पसंद किए गए।

इसके बाद फिल्मों में धीरे-धीरे होली गीत कम देखने को मिले। वर्ष 2000 में फिल्म 'मोहब्बतें' में शाहरुख खान पर 'सोनी सोनी अंखियों वाली' होली गीत फिल्माया गया, जिसने युवाओं को आकर्षित किया। इसके बाद अमिताभ बच्चन और हेमा मालिनी की फिल्म 'बागबान' में भी 'होली खेले रघुवीरा अवध में' बहुत ही आकर्षक रूप से फिल्माया गया। बेहद दिलकश और मनमोहक अंदाज में फिल्माया गया 2005 में आई फिल्म वक्त का गीत 'डू मी फेवर लेट्स प्ले होली' अक्षय कुमार और प्रियंका चोपड़ा पर फिल्माया आधुनिकता के रंगों में रंगा युवाओं की पसंद बना। फिल्मी गीतों के साथ-साथ बृज, भोजपुरी, राजस्थानी होली गीतों की एक लंबी सूची है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

सितारों के तलाक, कितनी हकीकत कितना मजाक

अशोक जोशी

इन दिनों बॉलीवुड में गोविंदा और उनकी पत्नी सुनीता के तलाक को लेकर चर्चाएं गरम हैं। पिछले कई दिनों से उनके बीच तनाव और अलग अलग रहने की खबरें आ रही थी। शादी के लंबे अंतराल के बाद इनके

तलाक की बातें वैसे तो प्रशंसकों के गले उतरती नहीं फिर भी यह फिल्मी दुनिया है जहां कुछ भी फिल्मी हो सकता है। यही स्थिति आमिर खान की है। वे दो बार शादी कर चुके और तलाक भी दे चुके। आमिर की पहली शादी रीना दत्ता से हुई थी, जिनसे उनके दो बच्चे जुनैद और आईरा खान। उनकी दूसरी पत्नी, निर्देशक किरण राव थी, जिनसे उन्होंने 2005 में शादी की और 2021 में आमिर अलग हो गए थे। अब वे तीसरी शादी की तैयारी कर रहे हैं।

यह फिल्मी तलाक का पहला मामला नहीं है, जिनकी चर्चा आम हो रही है। इससे पहले भी फिल्मी दुनिया में इस तरह के तलाक की खबरें चर्चित होती रही हैं। कई बार यह खबरें वास्तव में सही और हकीकत होती है, जबकि ज्यादातर इनमें किसी खास मकसद या प्रचार पाने की गरज से तलाक की खबरें बनाई और उडाई जाती हैं। तलाक की सबसे पहली सनसनीखेज खबर फिल्मों के ग्रेट शोमैन राज कपूर को लेकर तब उड़ी थी, जब वे 'संगम' का निर्माण कर रहे थे। तब यह चर्चा आम थी कि राज कपूर और वैजयंती माला के बीच नजदीकी संबंध निर्मित हो गए हैं। इसके चलते उनकी पत्नी कृष्णा कपूर इतनी नाराज हुई थी, कि वे देवनार कॉटेज को छोडकर अपने बच्चों को लेकर होटल में रहने चली गई है। बाद में पता चला कि यह सब फिल्म 'संगम' को चलाने के लिए चला गया एक हथकंडा था। यह जुगाड काम भी आ गया और संगम सुपर-डुपर हिट रही।

'इंसाफ का तराजू' के नायक राज बब्बर अपनी प्रेयसी और बाद में बनी पत्नी स्मिता पाटिल के प्यार में इतने गहरे डूब गए थे कि उन्होने अपनी ब्याहता बीबी और थिएटर एक्ट्रेस नादिरा बब्बर को तलाक दे दिया था। वह अपने बच्चों को लेकर अलग रहने लगी थी। लेकिन, शादी के एक साल बाद ही जब प्रसव के दौरान स्मिता पाटिल का स्वर्गवास हो गया तो नादिरा बब्बर और राज बब्बर के बीच का तलाक भी कहानी बनकर ही रह गया। कहा तो यह भी जाता है कि डिस्को डांसर मिथुन चक्रवर्ती और चांदनी गर्ल श्रीदेवी ने आपस में शादी कर ली थी। फिर बाद में न जाने क्या हुआ कि दोनो तलाक लिए बिना अलग-अलग हो गए। श्री देवी से शादी करने के लिए बोनी कपूर ने अपनी पत्नी को तलाक दे दिया जिससे उनके बच्चों के बीच सालों तक अनबन बनी रही।

किशोर कुमार ने भी कई शादियां की और कई बार उनका तलाक हुआ। उनकी पहली शादी रूमा गांगुली से हुई थी जिसे तलाक देकर किशोर कुमार ने मधुबाला से शादी कर ली। मधुबाला के निधन के बाद किशोर कुमार ने योगिता बाली से शादी कर सबको चौंका दिया। लेकिन, यह बेमेल जोडी ज्यादा दिनों तक टिक नहीं सकी और दोनों का तलाक हो गया। योगिता बाली ने मिथुन को अपना जीवन साथी बना लिया जो कि अपनी पत्नी से तलाक लिए बैठे थे और किशोर कुमार ने लीना चंदावरकर को अपनी जीवन संगिनी बना लिया।

किशोर कुमार जिस हीरो राजेश खन्ना के लिए पार्श्व गायन कर ऊंचाई पर चढ बैठे थे, उस राजेश खन्ना का दाम्पत्य जीवन भी ज्यादा सफल नहीं रहा। डिंपल और राजेश खन्ना में अलगाव हो गया और दोनो अलग अलग रहते रहे। लेकिन, अलग रहकर भी दोनो एक-दूसरे से मिलते जुलते रहे। ऐसी ही कुछ कहानी रणधीर कपूर की भी रही है। बबीता से प्रेम विवाह करने और दो बच्चियों के बाद भी दोनों के बीच अलगाव हो गया और दोनो अलग अलग रहकर बच्चों का साथ निभाते रहे और कपूर परिवार के सुखी कुनबे के फोटोग्राफों की गवाही देते रहे। आज भी दोनों अलग अलग रहते हैं, लेकिन पार्टियों और पारिवारिक कार्यक्रमों में दोनों साथ साथ होते हैं।

फिल्मी तलाक की एक फिल्मी कहानी ऋतिक रोशन और उनकी पत्नी सुजैन खान की भी कम दिलचस्प नहीं है। दोनों ने प्रेम विवाह किया और लम्बे समय तक साथ रहने के बाद करोड़ों रुपए के लेनदेन के बाद एक दूसरे से तलाक ले लिया। लेकिन, जिस तरह से ऋतिक रोशन और सुजैन एक दूसरे के साथ देश विदेश

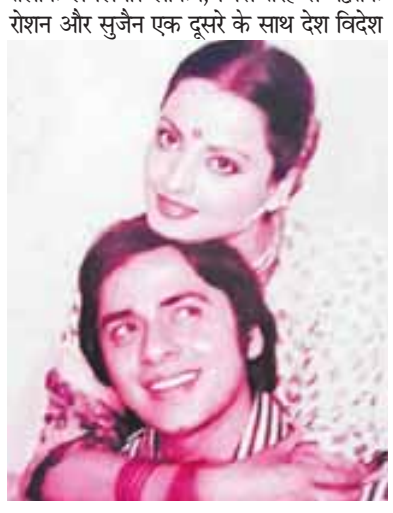

में अपने बच्चों के साथ हॉलिडे मनाते दिखाई देते हैं उसे देखकर लगता ही नहीं कि दोनों में तलाक हुआ है। फिल्मी विवाह और तलाक का एक और बेमिसाल उदाहरण रेखा का है। रेखा ने कब, किससे और कितनी बार शादी की कोई नहीं जानता। कहा तो यह भी जाता है कि उन्होने विनोद मेहरा से शादी की।

कभी संजय दत्त जैसे कम उम्र के सितारे से उनकी शादी की अफवाह उड़ी। अनेकों बार उसे मंगलसूत्र पहने और मांग भरे देखा गया। फिल्मी सितारों में धर्मेंद्र ने चतुराई से काम लिया और अपनी पहली पत्नी प्रकाश कौर को तलाक दिए बिना हेमामालिनी से शादी कर ली। बताया जाता है कि हेमा मालिनी से शादी करने के लिए उन्होंने बकायदा इस्लाम स्वीकार किया था। फिल्मकारों में चेतन आनंद की पत्नी उमा और उनका साथ बरसों तक चला लेकिन प्रिया राजवंश के जीवन में आते ही दोनों में तलाक हो गया। इसके बाद चेतन आनंद भले ही प्रिया राजवंश के साथ अधिकारिक रूप से घर नहीं बसा सके, लेकिन उनकी पूर्व पत्नी उमा ने इब्राहिम अलकाजी के साथ अपना घर बसा लिया।

इन दिनों गोविंदा और उनकी पत्नी सुनीता के बीच अलगाव और अलग अलग रहने के साथ तलाक की जो चर्चा है, उसमें भी संजीदगी कम मजाक ज्यादा लगता है। हालांकि, दोनों के अलग रहने की जो वजह बताई गई वह भी गले नहीं उतरती कि काम की व्यस्तता के बाद जब गोविंदा देर रात लौटते हैं तो वह घर में किसी को परेशान नहीं करना चाहते, इसलिए अपने आफिस वाले घर सो जाते हैं। आश्चर्य होता है कि जब चार चार शिफ्टों में काम करते थे तब उन्होने इस तरह का नाटक नहीं किया तो अब जब उनके सितारे धुंधलाने लगे हैं तो तलाक का यह नाटक महज अपनी गिरती लोकप्रियता को बचाने के हथकंडे से ज्यादा कुछ नहीं लगता। क्योंकि, जिस मोड पर उन्हें अपनी बेटी की शादी करनी है, उस उम्र में यदि वह एक तथाकथित मराठी एक्ट्रेस के चक्कर में सेहरा बांधने का ख्वाब देखने लगे तो

इससे बडा तमाशा और कोई हो ही नहीं सकता। यदि बॉलीवुड से इतर हॉलीवुड में तलाक के प्रसंगों की बात की जाए तो वहां ब्यूटी क्वीन एलिजाबेथ टेलर की आठ शादी और सात तलाक से बढ़कर कोई दूसरा मामला नहीं हो सकता। इस दौरान उन्होने अपने पूर्व पति रिचर्ड बर्टन के साथ दो बार शादियां और दो बार तलाक लिया था।

फ़ुर्सत के रात-दिन, बदौलत आईपीएल!

प्रकाश पुरोहित

इंडियन प्रीमियर लीग को हिंदी में आईपीएल कहते हैं। (दो भाषा जानने का यही फायदा है कि तीसरी की गुंजाइश बची रहती है।) हां तो मेरी मनमर्जी के दिन अब शुरू होने जा रहे हैं। आईपीएल शुरू होने को होता है और मुझे यूं लगता है, जैसे पत्नी, गरमी की छुट्टियों में डेढ़ माह के लिए मायके जा रही हो। दुनिया भर के ना जाने कितने काम मुल्तवी हैं, जो इस समय के लिए मैंने रख छोड़े हैं। स्कूल में गरमी-दीवाली की छुट्टी जैसा आनंद महसूस होता है मुझे आईपीएल के दौरान।

इसकी इकलौती वजह यह है कि 'मैं आईपीएल नहीं देखता हूं।' आज तक एक भी गेंद देखी हो तो दोजख का गुनहगार! खालिस टेस्ट मैच या वन-डे से नीचे कभी समझौता नहीं किया। वैसे ये भी साल भर चलते रहते हैं और मेरे कई जरूरी काम आईपीएल के लिए मुल्तवी हो जाते हैं। ये दो महीने मेरे काम के होते हैं, जब कि आईपीएल जोर-शोर से चल रहा होता है। कह सकते हैं, यह मेरे 'धंधे का टाइम' होता है।

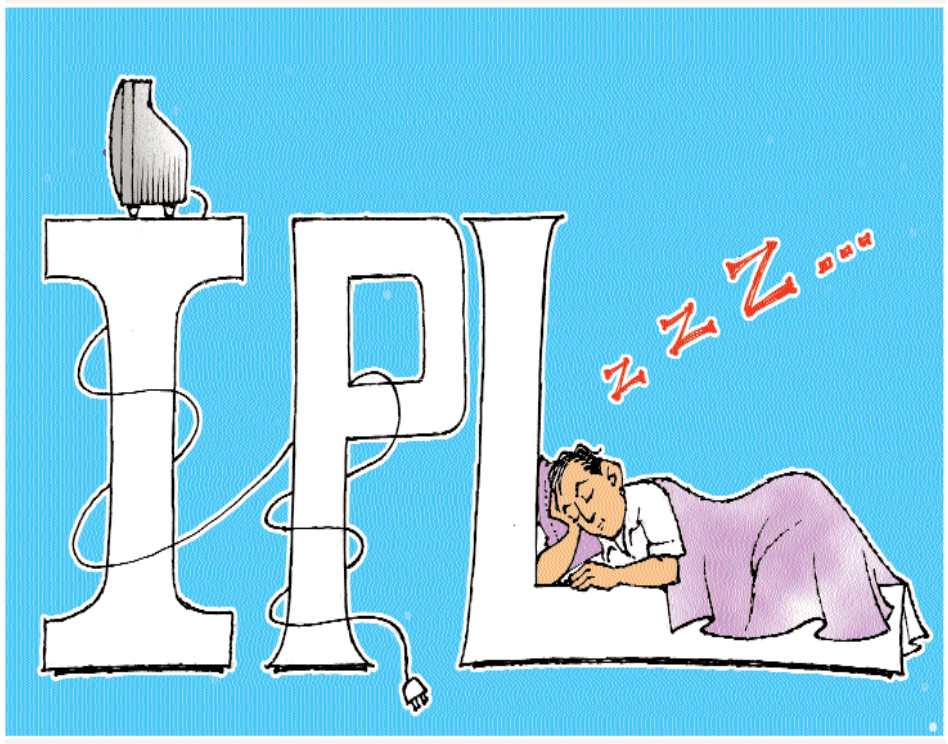

अब आप ही बताइए कि जब आपकी अपनी कोई टीम ही नहीं हो तो किसके लिए इतना समय खराब करें। 'मध्यप्रदेश इलेवन या मालवी दाल-बाटी सुपर किंग' जैसे नाम वाली हमारी टीम होती तो भी कुछ समय डिवोट कर सकता हूं, लेकिन बेगानी शादी में अब्दुल्ला बनने का मुझे कोई शौक नहीं है। इतना घालमेल है आइपीएल की टीम में कि याद रखना भी मुश्किल कि इस बार कौन-सी टीम में, कौन खेल रहा है या कौन खेत रहा है!

जो टकटकी लगा कर पूरे समय मैच में धंसे रहते हैं, उनसे भी पूछ चुका हूं कि बेटिंग कर रही टीम के आधे नाम ही बता दें, तो जवाब आता है, एक आउट होगा तो दूसरा आ ही जाएगा, इसमें नाम याद रखने की क्या जरूरत है। इसमें रहस्यवाद भी है कि आपको पता नहीं होता है कि अब कौन आएगा, इससे खेल का रहस्य, रोमांच और बढ़ जाता है। यही हाल गेंदबाजी का है कि अपनी भारतीय टीम है, तो पता है बुमरा के बाद सिराज ही आएगा, तो रोमांच कहां रह जाता है! क्रिकेट में खेल से ज्यादा रोमांच जरूरी है। आईपीएल तो ताश के पत्तों की तरह है कि नहीं पता सामने वाला अगली चाल क्या चलेगा!

जब मैं टेस्ट मैच देख रहा होता हूं तो घर आने वाला दुआ-सलाम के पहले पूछता है 'स्कोर क्या हुआ?' 'दो विकेट पर अस्सी रन।' यह मेरा स्थायी जवाब होता है। 'कौन बैटिंग कर रहा है?' 'थॉमसन और लिली!' यह भी स्थायी जवाब है। 'मतलब अपन बॉलिंग कर रहे हैं?' 'नहीं, पाकिस्तान और ऑस्ट्रेलिया खेल रहे हैं।' अब यह बताने की तो कोई जरूरत नहीं कि यह भी मेरा स्थायी जवाब है। 'तो इंडिया का मैच नहीं देख रहे हो?' शिकायत आती है देशभक्त की तरफ से।

'अगले माह है अपना टेस्ट मैच...!' पक्का जवाब देता हूं!

आईपीएल में कोई मुझ से नहीं पूछता, क्योंकि मेरे घर के टीवी को सर्विसिंग के लिए भेज देता हूं उस दौरान। 'अरे आइपीएल नहीं देख रहे हो?' घर में घुसते ही यूं उलाहना देते हैं, जैसे कोई राष्ट्रद्रोह कर रहा हूं या अमित शाह के लड़के से मेरी दुश्मनी हो!

आइपीएल देखने के लिए अज्ञानी होना बहुत जरूरी है, क्योंकि चाह कर भी कोई ना तो सभी टीम याद रख सकता है और ना उनके खिलाड़ी, जबकि जो लोग मुझे आइपीएल के दौरान निठल्ला बैठे देखते हैं तो मेरे क्रिकेट-दुश्मन होने पर शर्त बदने को तैयार हो जाते हैं। अपनी टीम का मैच कब है, यह शाहरुख और प्रीटी जिंटा या नीता अंबानी को भी सेक्रेटरी याद दिलाते होंगे। इतनी कचरघान होती है कि खिलाड़ी खुद अपना मैच और बल्लेबाजी क्रम याद रख लें तो गनीमत।

मेरा अंदाज है खिलाड़ी भी दूसरे खिलाड़ी से बात करने में घबराते होंगे कि क्या मालूम अपनी ही टीम में हैं या इस बार किसी और ने इसे खरीद लिया या इस बार बिका ही नहीं। आम जिंदगी में बिक गए आदमी को बुरा मानते हैं, लेकिन यह आइपीएल ही है, जहां ना बिके तो घर में सन्नाटा छा जाता है। यह बताने से भी हिचकते हैं कि इस बार नहीं बिक पाया, क्योंकि दाम ज्यादा लगाए थे!

इस दौरान कोई किसी से कुछ भी नहीं पूछता, क्योंकि ना तो देखने वाले को कुछ मालूम रहता है और जो आकर बैठा है, उसका तो सवाल ही नहीं। ज्यादातर यही पूछते हैं, 'धोनी आउट हो गया क्या' या 'विराट अभी आया या नहीं!' दरअसल, इस खेल की जो खासियत है, वही कमजोरी भी है कि हर गेंद पर चौके या छक्के की आशंका बनी रहती है और ज्यादातर इसी उम्मीद में रहते हैं कि बीस ओवर की एक सौ बीस गेंदों पर गेंद स्टेडियम के पार ही नजर आए।

खिलाड़ियों का तो नाम है, असल खेल तो देखने वाले खेलते हैं 'चल छक्का पड़ेगा इस गेंद पर...!' 'चौका तो लगेगा ही, देख लेना...' 'आउट हो जाएगा...!' 'खेल कौन रहा है?' 'अजिंक्य रहाणे...', 'तो बस गया...!' पूरा समय शेयर बाजार के आंकड़े देखने वाले अंदाज में गुजरता रहता है।

इस दौरान मेरे घर भी कोई नहीं आता कि सभी को पता है, मैं आईपीएल नहीं देखता हूं और ना देखने देता हूं। टेस्ट मैच के दौरान जो स्कोर पूछने का शौक फरमाते हैं, वे भी नहीं आते कि यहां तो मुंह बांध कर ही बैठना होगा। सड़कों पर भी मैं मजे से घूमता रहता हूं कि लोग तो आईपीएल से खेल रहे होते हैं। टॉकीज के टिकट भी आधे दाम पर हो जाते हैं तो 'छावा' के अलावा जितनी भी बची फिल्में हैं, देखने का यह स्वर्णिम अवसर होता है। लोग छुट्टियां मनाने बाहर जाते हैं और मैं आईपीएल का इंतजार करता हूं। ऐसा लगता है, जैसे पूरे शहर में मैं अकेला हूं और सारा शहर छुट्टी मनाने बाहर गया है, पत्नी सहित।

आईपीएल को बेहतर समझना है तो डब्ल्यूडब्ल्यूई को देख लीजिए कि दो पहलवान लड़ रहे हैं और अपन को इसी में मजा आ रहा है कि क्या पटका है, जबकि इनमें से कोई भी अपना (रिश्तेदार) नहीं है। यह भी नहीं मालूम कि कौन, कहां का है, लेकिन बस उठापटक देखने में मन लग रहा है। वैसे ये कुश्ती ज्यादातर बच्चे देखते हैं और आईपीएल... बच्चे जैसे!

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

कुछ काम तजुर्बे के लिये भी कीजिए

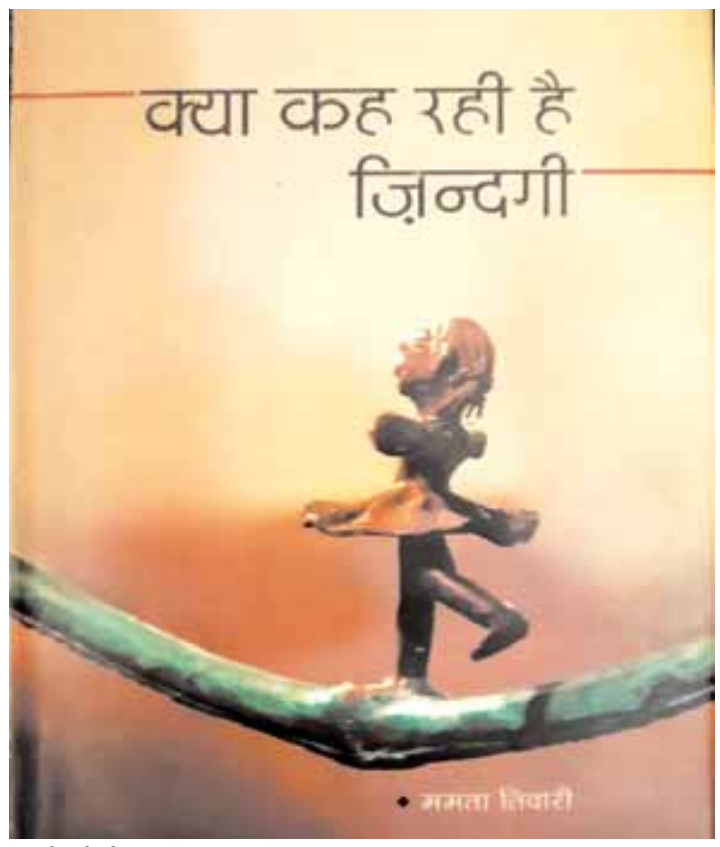

क्यों डरें जिंदगी में क्या होगा, कुछ ना होगा तो तजुर्बा होगा।''

हमारी पीढ़ी के लोग पुरानी लीक पर चलना पसंद करते हैं, अर्थात् कुछ नया ट्राय करने की ज़हमत नहीं उठाते। शायद अब इस उम्र में नया शुरू करने में डरते है। सारी जिंदगी सफलता ने कदम चूमे अब नया करने की कोशिश में असफल होकर सबके सामने शर्मिंदा क्यों होयें? आप अपने अनुभव की दुहाई नई पीढ़ी को देना बंद कर दीजिये। आज की पीढ़ी रोज़ नये अनुभव ले रही है। एक जॉब का अनुभव लेकर दूसरा जॉब स्विच कर रही है तो और ब्रांच तक बदलते नहीं डरती। हम जो स्थायित्व की ओर जा चुके हैं, अब सब तो कर लिया अब क्यों नया सीखे। अरे! भई कुछ नहीं तो तजुर्बा होगा। नई पीढ़ी के साथ कदम मिलाइये और सोचिये दिमाग हमेशा एक्टिव रहेगा। हम जागरूक होंगे। लोगो के साथ मिलकर समाज कल्याण के लिये संस्था बनाइये वहां नई चीज़े जैसे इंटरनेट सीखना (अभी बहुतों को नहीं आता), बैंक के काम करना सीखना (क्या हुआ बड़े ऑफिसर रह चुके है सो आपके मातहत कंप्यूटर, बैंक जैसे काम कर देते थे अब आप छोटी छोटी चीज़ों के लिये बच्चों की तरफ देखते थे) छूटी पढ़ाई पूरी करना जैसे काम कीजिये। बच्चों को पढ़ाने का अनुभव लीजिये। खैर, वकील और डॉक्टर का काम तो कभी नहीं छूटता।

आप सोचेंगे अभी तो चैन मिला है, हॉ तो आप यात्रायें कीजिये उम्र और स्वास्थ्य को ध्यान रख शहर चुनिये एक डायरी रखे मेरे मौसाजी अभी इतनी उम्र में अपनी काश्मीर यात्रा में इतनी बेहतरीन किताब निकाली है जो आपको वहॉ जाने पर मजबूर कर देगी। आप किसी पत्रिका या मैगज़ीन से जुड़ जाइये शुरूआती दौर में छोटी छोटी कहानियॉ, यात्रा अनुभव पर लिखिये। अच्छे आध्यात्मिक कार्यक्रम तो आप देखते ही होंगे। अब युवा लोगों के नाचने गाने, झूमने के प्रोग्राम में भी जाइए, दोस्तों का एक ग्रुप बना कर। छोटी विदेश यात्राओं का अनुभव लीजिए। अपने टिकट, होटल बुक करना सीख लीजिये। किसी सामाजिक संस्था में महीने में एक बार अकेले मिलने जाइये।

उफ़्फ़ कितना कुछ बाकी है जिंदगी में जो हम ने अनुभव नहीं किया। हमारे पड़ोसी को देख मुझे गर्व होता है उनकी पत्नी रिटायर्ड नहीं हुई। रिटायर्टमेंट के बाद उन्होंने कुकिंग का शौक (ये मुझे नहीं पता कि वो पहले से अनुभवी थे या अभी हुए) शुरू किया और धीरे-धीरे उन्होंने 'यू ट्यूब' पर अपने कुकिंग के एपिसोड्स डालने शुरू किए। लोगों से अभी रूबरू नहीं हुए थे, काफी कोशिशों के बाद उन्होंने सबके सामने अपने नए अनुभव की प्रस्तुति की।

मैं अच्छे बुरे की बात नहीं करती। मैं उनकी सराहना करती हूँ कि उन्होंने नए अनुभव से गुज़रने का साहस किया बगैर इस बात की परवाह किए कि लोग क्या कहेंगे? मज़ाक उड़ाएंगे। ढेर अनुभव है करने के लिए किताबों की दुनिया में छोटी सी लायब्रेरी खोल प्रवेश कीजिये। अच्छे आलेख रोज बोर्ड पर लगाइये। मजा लूटिए नए अनुभव का और रोज़ पूछिए जिंदगी से और क्या कह रही हो तुम?

श्रीनगर, कश्मीर की पतझड़ में चिनार के दरख्त की खूबसूरती भी मन मोह लेती है।

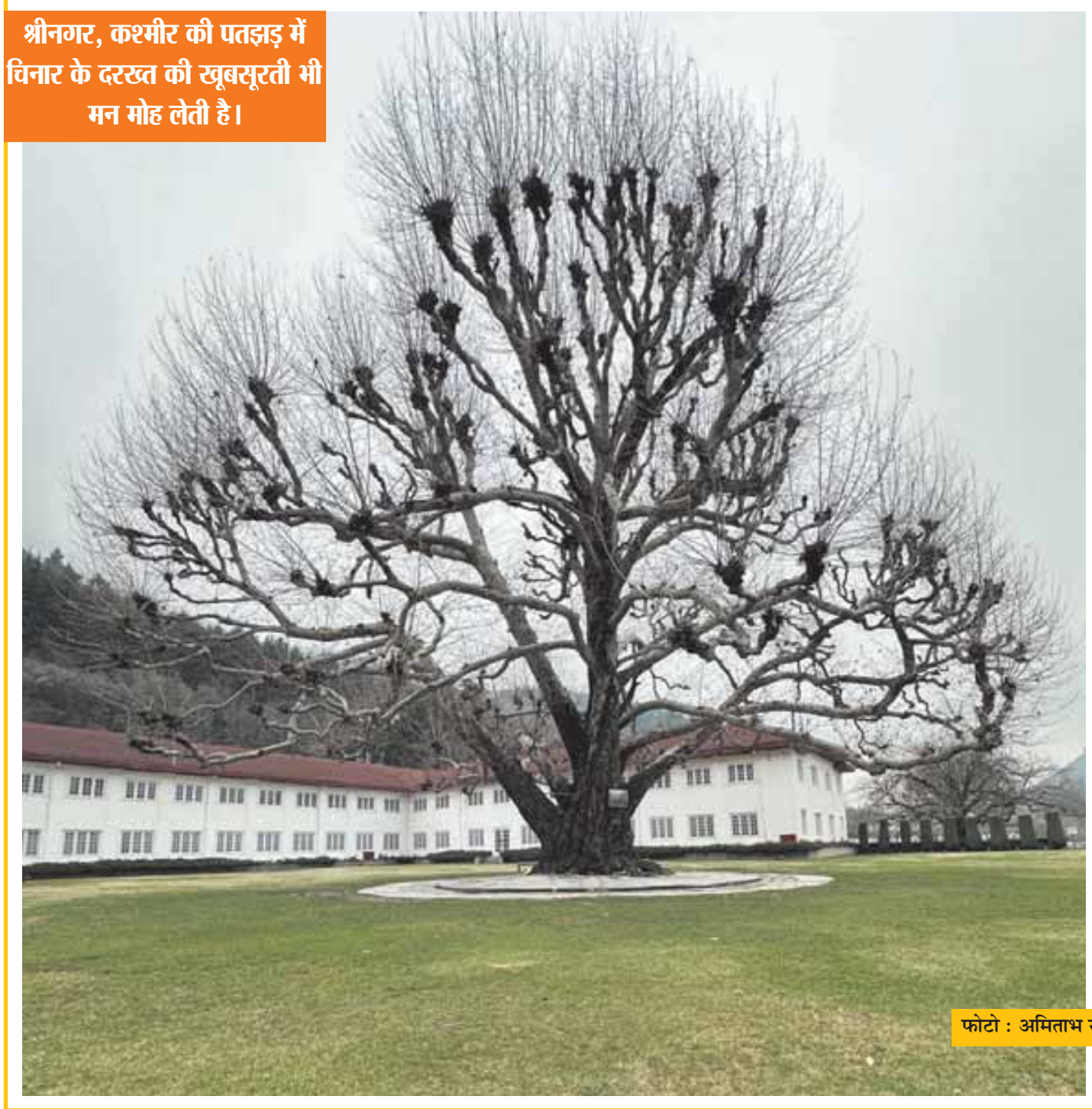

फोटो : अमिताभ स.

जुगलबंदी

समीर लाल 'समीर'

लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।

वादा किया वो कोई और था, वोट मांगने वाला कोई और

तिवारी जी जब से कुम्भ से लौटे हैं तब से बस अध्यात्म की ही बातें करते हैं। कई ज्ञानी जो उनकी बातें सुनते हैं वो पीठ पीछे यह भी कहते सुने जाते हैं कि तिवारी जी को अध्यात्म और धर्म का मूल अंतर ही नहीं पता है। सब घालमेल करके ऐसी बातें सुनाते हैं कि न तो दाल दाल रह जाये और न ही चावल चावल और उसे खिचड़ी मान भी लो तो बिल्कुल बेस्वाद। मगर उनकी उम्र का लिहाज करके कोइ सामने कुछ न बोलता अतः उनके प्रवचनों की शृंखला चलती चली जाती।

वैसे भी तिवारी जी का इस बात में अटूट विश्वास है कि ज्ञान बांटने के लिए होता है और जितना बांटोगे उतना ही बढ़ेगा। इस हेतु बस दो चीजों की आवश्यकता होती है - एक तो मुंह जो कि उनके पास है और दूसरा दो सुनने वाले के कान जो घंसू हर क्षण भक्ति भाव से तिवारी जी की हर बात सुनने के लिए खुला रखता है। उसके ज्ञान का एक मात्र स्त्रोत तिवारी जी ही थे, बाकी तो कोई पास भी न फटकने देता था तो ज्ञान क्या देता।

कुम्भ से लौटने के बाद ऐसा नहीं कि तिवारी जी का मूल आचरण बदल गया हो। बस आजकल जबसे अध्यात्ममय हुए हैं तबसे दोपहर का भोजन करने जाते वक्त सबसे कह कर निकलते हैं कि बस, प्रसाद ग्रहण करके आता हूँ। रात की शराब भी बदस्तूर जारी है मगर अब शराब नहीं पीते बल्कि सुरापान करते हैं। सुरापान के बाद तो प्रवचन एक नई ऊंचाई प्राप्त कर लेते हैं।

तिवारी जी देर रात गए घंसू और उसके द्वारा सुरा के इंतजाम हेतु घेर कर लाए गए दो अन्य भक्तों को ज्ञान दे रहे थे। उन्होंने कहा कि जिस तरह बहती नदी में जब आप डुबकी लगाते हैं तो जिस पानी में आप डुबकी लगाते हैं वो अलग पानी होता है और जिस में से आप डुबकी लगाकर निकलते हो वो अलग पानी होता है। नदी निरंतर प्रवाहमान रहती है। हम चाहे उसे गंगा कहें या नर्मदा-नाम भले जो रख लें मगर पानी निरंतर बह रहा है और स्वरूप निरंतर बदल रहा है।

ठीक वैसे ही हम इंसान हैं। जो हम कल थे वो आज नहीं हैं। नाम भले ही मेरा तिवारी है और इसका घंसू - लेकिन जो मैं कल था वो आज नहीं हूँ - मेरा दिमाग, मेरा अंग प्रत्यंग निरंतर प्रति-क्षण बदल रहा है। कल मैं कोई और था और आज कोई और। परिवर्तन भले आज और कल में न दिखे मगर परिवर्तन हो रहा है। अगर आज से दस साल पहले की मेरी तस्वीर देखो तो वो तो कोई और ही आदमी था। उसका ज्ञान, व्यवहार और रहन सहन सब कुछ अलग था। और वैसे ही आज से दस साल बाद होगा। तुम लंबे अंतराल में आप भेद कर पाते हो किन्तु यह प्रतिक्षण हो रहा है। पुराना स्वरूप खत्म - नया स्वरूप उत्पन्न।

आज के तकनीकी युग में जिस तरह फाईलों में छोटे छोटे बदलाव को एक नए वर्जन का नाम देते हैं जैसे प्रोजेक्ट अ वर्जन 1, फिर कुछ बदला प्रोजेक्ट अ वर्जन 2, फिर कुछ बदला प्रोजेक्ट अ वर्जन 3. याने कि सब फाइल अलग अलग हैं। वैसे ही मैं खुद परसों तिवारी वर्जन 1 था आज तिवारी वर्जन 3 हूँ।

कल जो तुम थे वो कल थे- वो कोई और था और आज जो तुम हो और वो कोई और है। तुम अपनी सुविधा के लिए उसे उसी नाम से पुकारे जा रहे हो।

जो कभी डाकू अंगुलीमाल था वो बाद में संत हो लिया। डाकू खत्म हो गया और संत का जन्म हो गया।

घंसू को तो मानो अथाह ज्ञान प्राप्त हो गया हो। वो तिवारी जी के चरणों में गिर पड़ा। कल शहर का एक साहूकार जिससे घंसू ने काफी उधार ले रखा है वो वसूली के लिए आने वाला है। घंसू उसको यही ज्ञान देगा कि जिसे तुमने उधार दिया था वो घंसू वर्जन 1 था वो अब खत्म हो चुका है और आज जिससे तुम मिल रहे हो वो घंसू वर्जन 2 है- उसे उस घंसू से कुछ लेना देना नहीं है।

सब नेता भी तो वादा करके यही सोचते होंगे कि जिसने वादा किया था वो कोई और था और आज जो वोट मांग रहा है वो कोई और।